Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ

(ऐराफ़ : 206)

(तर्जुमा) : और तू अपने रब को अपने दिल में कभी गिड़गिड़ाते हुए और कभी डरते डरते और बग़ैर आवाज़ किए सुबह और शाम के समय याद किया कर और ग़ाफ़िलों में से न हो

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-4

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

03 रजब 1444 हिज्री कमरी, 26 सुलह 1402 हिज्री शम्सी, 26 जनवरी 2023 ई.

अहमदियत के मर्कज़ क़ादियान दारुल अमान में 127वां जलसा सालाना का सफ़ल और बाबरकत आयोजन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा का उद्देश्य दीनी और रुहानी और अख़लाक़ी तरक़्क़ी वर्णन फ़रमाया और इस पर बहुत शिद्दत से ज़ोर दिया

यही उद्देश्य है जिसके हुसूल के लिए दुनिया के हर मुल्क में जहां जमाअत अहमदिया क़ायम है जलसा सालाना आयोजित होता है

1891 के जलसा में 75 और 1892 के जलसा में 327 लोग शामिल हुए

आज अल्लाह तआला के फ़ज़्लों की बारिश इस क़दर है कि अल्लाह तआला हर मुल्क में हमें हज़ारों की संख्या में शामिल होने वाले दिखा रहा है क्या यह अल्लाह तआला की मदद का और उसके वादों का जो उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए सबूत नहीं है? निसंदेह है

एक ही वक़्त में समस्त मुल्क मेरी बातें सुन रहे हैं और देख भी रहे हैं और हम उनको देख रहे हैं

यह भी अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अपने वादे को पूरा करने का इज़हार है

हमें इस फ़ज़्ल से फ़ैज़ उठाने और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपनी ज़िम्मेदारियाँ भी अदा करनी होंगी, अपने अह्द और अपने वादे को जो हमने जमाअत में शामिल हो कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किया है पूरा करना होगा,अपने अंदर पाक तबदीलियां पैदा करनी होंगी

शरायते बैअत में से दूसरी शर्त बैअत के हवाले से कुछ बातें करूँगा

अगर उसके अनुसार हम अपनी ज़िंदगियों को ढाल लें तो अपने अंदर भी और दुनिया में भी एक बड़ा इंकेलाब पैदा कर सकते हैं

दूसरी शर्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नौ बुराईयों का वर्णन किया है और ये बुराईयां ऐसी हैं जिनको छोड़ने से इन्सान रुहानी और अख़लाक़ी तौर पर तरक़्क़ी कर सकता है

आज लजना इमाइल्लाह की तंज़ीम को बने हुए भी सौ साल हो गए हैं लजना को भी याद रखना चाहिए कि ये जायज़ा लें कि इस सौ साल में किस हद तक लजना ने अपने अंदर पाक तबदीली पैदा की है

हर शामिल जलसा जो किसी भी तरह जलसा में शामिल है यह अह्द करे कि हमने पाक तबदीली अपने अंदर पैदा करनी है और अह्द बैअत को अपनी तमाम-तर सलाहियतों के साथ निभाना है, अल्लाह तआला हम सबको इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

m.t.a इंटरनैशनल के ज़रीया सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का इस्लामाबाद यू.के से जलसा मे शामिल होने वालों से विशेष भाषण

कोविड 19 के बाद पूरी सलाहियत के साथ जलसे का आयोजन * तीनों दिन जलसा के प्रोग्रामों की लाईव स्ट्रीमिंग और उसके ज़रीया अंदरून-ओ-बैरून-ए-मुल्क जलसा से वसीअ इस्तिफ़ादा * लाईव स्ट्रीमिंग के ज़रीया बयासी हज़ार पाँच सौ लोगों ने जलसा की कार्रवाई देखी और सुनी * 14500 अहमदियत से प्रेम करने वालों की जलसा में शमूलीयत * 37 देशों की नुमाइंदगी * कुछ अफ्रीकन देशों के जलसे और अंतिम ख़िताब में उनकी शमूलीयत * अंतिम ख़िताब में मस्जिद मुबारक इस्लाम आबाद में 1404 बैतुल फ़तूह में 1200 मस्जिद फ़ज़्ल में 400 अहबाब का इजतेमा * नमाज़ तहज्जुद * दरसुल क़ुरआन और ज़िक्र इलाही से मामूर माहौल * उल्मा के विशेष भाषण * 9 मुल्की-ओ-ग़ैरमुल्की भाषाओं में जलसा के प्रोग्रामों का अनुवाद * अहबाब जमाअत की मालूमात में इज़ाफ़ा के लिए तर्बीयती उमूर पर मुश्तमिल डाकोमेंटरी और मुख़्तलिफ़ मालूमाती नुमाइशों का आयोजन * निकाहों के ऐलानात * प्रिंट और इलैक्ट्रॉनिक मीडीया में जलसा की कवरेज * पुरसुकून और ख़ुशगवार माहौल में जलसा की समस्त कार्रवाई की तकमील* (मंसूर अहमद मसरूर, मुंतज़िम रिपोर्टिंग)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अलहमदु लिल्लाह कि जलसा सालाना क़ादियान बुस्तान-ए-अहमद के वसीअ अहाता में तिथि 23,24,25 दिसंबर 2022 दिन शुक्रवार शनिवार रविवार आयोजित हो कर बख़ैरो खूबी समाप्त हुआ। इस से पूर्व कॉरोना महामारी की वजह वर्ष 2019 और 2020 में जलसा का आयोजित नहीं हो सका था। और वर्ष 2021 में सीमित हाज़िरी के साथ जलसा आयोजित हुआ था। अलहमदो लिल्लाह कि इस वर्ष जलसा सालाना क़ादियान अपनी पूरी सलाहियत के साथ आयोजित हुआ। देश के दूर दराज़ इलाकों से अहमदियत के प्रेमी बड़े ही ज़ौक़-ओ-शौक़ और जोश-ओ-ख़ुरोश के साथ जलसे में शिरकत की ख़ातिर क़ादियान आने लगे। और जलसे के दिन में जूँ-जूँ क़रीब आते गए क़ादियान दारुल अमान की रौनक में तूं तूं इज़ाफ़ा होता गया यहां तक कि क़ादियान पूरी तरह मेहमानों से भर गया। जिधर निकलो, जिधर नज़र दौड़ाओ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान नज़र आते। बैरून-ए-मुल्क से भी एक बड़ी संख्या में अहमदियत के प्रेमी जलसा में शामिल हुए। क़ादियान दारुल अमान की प्यारी बस्ती, एक-बार फिर ख़ुशियों और रौनक़ों से भर गई। मेहमानों की आमद से पूर्व ही निज़ामत बिजली और रोशनी की तरफ़ से मुहल्ला की समस्त गलियों और सड़कों को टयूब लाइटों के द्वारा रोशन कर दिया गया। बहिश्ती मक़बरा, दारुल मसीह , मस्जिद मुबारक, मस्जिद अकसा और मिनारतुल मसीह को बिजली के छोटे छोटे रंगीन बल्बों से दुल्हन की तरह सजाया गया। इस तरह मसीह मौऊद और मह्दी माहूद अलैहिस्सलाम की यह रूहानी बस्ती अपनी बातिनी जगमगाहट के साथ साथ ज़ाहिरी तौर पर भी जगमगा उठी।

मुआइना कारकुनान जलसे का प्रबंध

तिथि19 दिसंबर 2022 दिन सोमवार ठीक पौने ग्यारह बजे जलसा गाह बुस्तान-ए-अहमद में नुमाइंदा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ श्रीमान मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला और अमीर जमाअत अहमदिया क़ादियान की ज़ेर-ए-सदारत मुआइना कारकुनान की तक़रीब अमल में आई। नुमाइंदा हुज़ूर अनवर जूंही बुस्तान अहमद में तशरीफ़ लाए उनके स्वागत में नारों से इस्तिक़बाल किया गया। आपने सब से पहले जलसा सालाना के विभागों के बैनर तले खड़े मुंतज़मीन और नाज़ेमीन कारकुनान से मुलाक़ात की और मुसाफ़ा किया। इसके बाद नुमाइंदा हुज़ूर अनवर मस्तूरात के पंडाल में तशरीफ़ ले गए। तक़रीब की कार्रवाई तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से शुरू हुई जो श्रीमान हुमायूँ रशीद साहिब मुतअल्लिम जामिआ अहमदिया क़ादियान ने की और अनुवाद पेश किया। इसके बाद नुमाइंदा हुज़ूर अनवर ने ख़िताब फ़रमाया। ठीक साढ़े ग्यारह बजे इजतमाई दुआ के बाद तक़रीब का समापन हुआ।

तिथि 23 दिसंबर 2022 शुक्रवार का दिन

पहला दिन इजलास का उद्घाटन

मेहमानान सुबह जल्द ही जलसा गाह के अहाता में आकर बैठने लगे और मुख में दुआएं करते रहे और जोश-ए-ईमान से नारा तकबीर अल्लाह हू अकबर बुलंद करते रहे। यह दृश्य बहुत ईमान अफ़रोज़ था।

झण्डा लहराना

श्रीमान मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन शाहिद साहिब सदर, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान ने सुबह ठीक दस बजे लिवाए अहमदियत लहराया और फिर इजतेमाई दुआ करवाई

उद्घाटनिय भाषण

उद्घाटनिय इजलास ज़ेर-ए-सदारत श्रीमान मौलाना मुहम्मद करीम उद्दीन शाहिद साहिब सदर, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान आयोजित हुआ। तिलावत क़ुरआन-ए-करीम श्रीमान तारिक़ अहमद लोन साहिब आफ़ कश्मीर ने की। आप ने सूरत तौबा की आया 7 से 10 की तिलावत की जिस का उर्दू अनुवाद श्रीमान मौलवी सय्यद कलीमुद्दीन अहमद साहिब क़ाज़ी सिलसिला निज़ामत दारुल क़ज़ा क़ादियान ने पेश किया।

इसके बाद श्रीमान मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन शाहिद साहिब सदर, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान ने उद्घाटनिय भाषण फ़रमाया

इसके बाद श्रीमान तनवीर अहमद नासिर साहिब नायब नाज़िर नशरो इशाअत क़ादियान ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मंजूम कलाम निहायत सुंदर आवाज़ में पढ़ कर सुनाया।

इस इजलास की पहली तक़रीर श्रीमान मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला और अमीर जमाअत अहमदिया क़ादियान ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा जीवनी पर की। आपकी तक़रीर का विषय था "क़ायाम-ए-अमन के हवाले से आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी से उदाहरण"

इसके बाद श्रीमान मौलाना मुनीर अहमद ख़ादिम साहिब ऐडीशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद जुनूबी हिंद ने "सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अल्लाह पर विश्वास और क़बूलियत दुआ के आईना में" के विषय पर की।

पहला दिन दूसरा इजलास

पहले दिन का दूसरा इजलास ठीक 2 बज कर 5 मिनट पर शुरू हुआ। यह इजलास श्रीमान मौलाना जलालुद्दीन साहिब नय्यर सदर मजलिस तहरीक-ए-जदीद क़ादियान की सदारत में आयोजित हुआ। सूरत तौबा की आयात 100 से 103 की तिलावत श्रीमान मुहम्मद इबराहीम साहिब ने की और उन आयात का अनुवाद अज़ तफ़सीर-ए-सग़ीर श्रीमान मौलवी ताहिर अहमद तारिक़ साहिब नायब नाज़रा सलाह व इरशाद मर्कज़िया ने पेश किया। नज़म श्रीमान अब्दुल वासे साहिब कारकुन निज़ामत तामीरात क़ादियान ने पढ़ी जिन्होंने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पाकीज़ा मंजूम कलाम में से चंद पंक्तियाँ अत्यधिक सुंदर आवाज़ से पढ़ीं

इजलास की पहली आलिमाना तक़रीर श्रीमान मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन साहिब शाहिद सदर सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान ने ''हस्ती बारी ताला-हुसूल मार्फ़त इलाही के मार्ग" के विषय पर भाषण दिया।

इसके बाद इजलास की दूसरी तक़रीर श्रीमान मौलवी फ़िरोज़ अहमद नईम साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज और अमीर ज़िला दिल्ली ने "सीरत हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो और सीरत हज़रत हकीम नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हो" के अनवान पर की

इसके बाद श्रीमान वसीम मुहम्मद साहिब सदर जमाअत अहमदिया सीरिया ने अरबी भाषा में तआरुफ़ी तक़रीर की जिसका उर्दू अनुवाद श्रीमान मौलाना जैनूद्दीन हामिद साहिब नाज़िम दारुल क़ज़ा क़ादियान ने पेश किया।

इस सैशन की आख़िरी तक़रीर विषय "सदाक़त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम -क़ुरआन और हदीस की दृष्टि से" श्रीमान हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़ साहिब क़ायमक़ाम ऐडीशनल नाज़िर आला जुनूबी हिंद ने की।

इसके बाद सदर-ए-इजलास की इजाज़त से पहले दिन का दूसरा इजलास बर्ख़ास्त हुआ। हिन्दुस्तानी वक़्त के मुताबिक़ ठीक 30:6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ख़ुतबा जुमा लाईव प्रसारित हुआ। समस्त मसाजिद में इजतेमाई तौर पर मर्दों ने हुज़ूर का ख़ुतबा सुना और घरों में भी अहबाब-ओ-मस्तूरात ने ख़ुतबा सुना।

तिथि 24 दिसंबर2022 शनिवार का दिन

दूसरा दिन पहला इजलास

दूसरे दिन का पहला इजलास ज़ेर-ए-सदारत श्रीमान मुनीर अहमद साहिब हाफ़िज़ आबादी सैक्रेटरी मजलिस कारपर्दाज़ बहिश्ती मक़बरा क़ादियान आयोजित हुआ। तिलावत क़ुरआन-ए-मजीद श्रीमान राशिद ख़िताब साहिब सदर मजलिस अंसारुल्लाह कबाबीर ने की। आप ने सूरत नूर की आया 31 से 33 की तिलावत की। अनुवाद श्रीमान मौलवी जमाल शरीयत साहिब नायब इंचार्ज शोबा नूरुल इस्लाम क़ादियान ने पेश किया। इसके बाद श्रीमान मौलवी मुर्शिद अहमद डार साहिब उस्ताज़ जामिआ अहमदिया क़ादियान ने निहायत सुंदर आवाज़ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंजूम कलाम पेश किया।

इस इजलास की पहली तक़रीर श्रीमान मौलाना मुहम्मद हमीद कोसर साहिब नाज़िर दावत इल्लाह मर्कज़िया शुमाली हिंद क़ादियान ने "इस्लामी पर्दा और इस की ज़रूरत और अहमियत और बरकत" के विषय पर की।

इसके बाद श्रीमान मौलाना मुज़फ़्फ़र अहमद नासिर साहिब नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया क़ादियान ने "नमाज़ बाजमाअत और तिलावत क़ुरआन-ए-करीम की एहमीयत और बरकात" के मौज़ू पर तक़रीर की।

इजलास की तीसरी तक़रीर श्रीमान पी .ऐम.मुहम्मद रशीद साहिब नाज़िर बैतुल माल ख़र्च वकीलुल माल तहरीक-ए-जदीद क़ादियान ने "इस्लाम में इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह की एहमीयत और बरकात" के विषय पर की।

दूसरा दिन दूसरा इजलास

दूसरे दिन का दूसरा इजलास जलसा पेशवा याने मज़ाहिब के तौर पर मनाया जाता है जिसके लिए मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के रहनुमाओं और साधू संतों, गुरूओं और पंडितों और चर्च के फ़ादरों को निमंत्रित किया जाता है। उनके इलावा सयासी रहनुमा भी तशरीफ़ लाते हैं जो जलसा और जमाअत अहमदिया की तालीमात के विषय मे अपने नेक ख़्यालात का इज़हार करते हैं।

यह इजलास ज़ेर-ए-सदारत श्रीमान सय्यद तनवीर अहमद साहिब सदर मजलिस

वक़्फ़ जदीद आयोजित हुआ। तिलावत क़ुरआन-ए-मजीद श्रीमान लुक़्मान अहमद तक़ी साहिब मुतअल्लिम जामिआ अहमदिया क़ादियान ने की। आप ने सूरत नमल आयात 61 से 64 की तिलावत की जिनका उर्दू अनुवाद श्रीमान अताउल्लाह नुसरत साहिब नायब नाज़िर बैतुल माल आमद ने पेश किया।

इसके बाद श्रीमान मुबश्शिर अहमद ख़ादिम साहिब उस्ताज़ जामिआ अहमदिया क़ादियान ने पंजाबी भाषा मे "अम्नने आलम और इस्लाम के अनवान" पर तक़रीर की।

इसके बाद सदर-ए-इजलास की इजाज़त से श्रीमान तनवीर अहमद ख़ादिम साहिब ने स्टेज पर तशरीफ़ फ़र्मा ग़ैर मुस्लिम मोअज़्ज़िज़ीन का परिचय करवाया और उन में से कुछ को जलसा सालाना क़ादियान से मुताल्लिक़ अपने ख़्यालात पेश करने की दावत दी। जिन मेहमानान किराम ने अपने ख़्यालात पेश किए उनके नाम निम्नलिखित हैं।

(1) डाक्टर बलजीत कौर साहिबा मिनिस्टर आफ़ अफेयर्ज़ गर्वनमैंट पंजाब (2) जगरूप सिंह सेखवां (3) स्वामी आदेश पूरी साहिब आफ़ हिमाचल, नुमाइंदा हिंदू ध र्म(4) फ़तहजंग सिंह बाजवा लीडर बी जे पी हलक़ा क़ादियान (5) केशव मुरारी दास साहिब, सदर इस्कॉन टेंपल दिल्ली (6) गुरविंद्र सिंह गोरा, मैंबर sgpc (7) प्रताप सिंह बाजवा ऐम. एल. ए हलक़ा क़ादियान (8)अमन शेर कलसी साहिब ऐम. एल. ए हलक़ा बटाला (9) अनुराग सूद साहिब होशयारपुर।

इन लोगों के अतिरिक्त और भी कुछ सम्मानित शख़्सियात स्टेज पर तशरीफ़ फ़र्मा थीं जिन का श्रीमान तनवीर अहमद ख़ादिम साहिब ने परिचय कराया और उन्हें शाल का तोहफ़ा देकर उनकी इज़्ज़त-अफ़ज़ाई की।

तिथि 25 दिसंबर 2022 इतवार का दिन

तीसरा दिन पहला इजलास

तीसरे दिन के पहले इजलास की कार्रवाई 10 बजकर 5 मिनट पर तिलावत क़ुरआन-ए-मजीद से शुरू हुई। श्रीमान हाफ़िज़ फ़ारूक़ आज़म साहिब इन्सपैक्टर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत ने सूरत ऑल-ए-इमरान आयात 103 से 106 की तिलावत की। इन आयात करीमा का उर्दू अनुवाद फ़र्मूदा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु श्रीमान मंसूर अहमद मसरूर ऐडीटर हफ़त रोज़ा बदर ने पेश किया। इसके बाद श्रीमान दबीर अहमद शमीम साहिब ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के मंजूम कलाम में से चंद अशआर निहायत सुंदर आवाज़ में सुनाए।

इस इजलास में उल्मा किराम की तीन तक़ारीर हुईं। पहली तक़रीर श्रीमान के तारिक़ अहमद साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत ने "ख़िलाफ़त आफ़ियत का हिसार" के विषय पर की।

इस इजलास की दूसरी तक़रीर श्रीमान मौलाना नेअमतुल्लाह नवाज़ साहिब नायब नाज़िम इरशाद वक़्फ़ जदीद ने "तब्लीग़ और दावत इल्लाह की एहमीयत और बरकात" के विषय पर की।

इस इजलास की तीसरी तक़रीर श्रीमान अताउल-मुजीब लोन साहिब सदर मजलिस अंसारुल्लाह भारत ने "हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के क़बूलीयत दुआ के ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात और दुआओं के मुताल्लिक़ हुज़ूर अनवर की तहरीकात-ओ-नसाएह" के विषय पर की।

तीसरा दिन अंतिम इजलास

आज तीसरे दिन के अंतिम इजलास का आग़ाज़ हसब-ए-रवायात सिलसिला तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो अज़ीज़म सफ़ीरुद्दीन ने की जिस का अनुवाद श्रीमान मौलवी नूरुद्दीन साहिब नासिर ने पेश किया। श्रीमान मौलवी नसरूममिल्लाह साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पाकीज़ा मंजूम कलाम सुंदर आवाज़ में सुनाया।

इसके बाद श्रीमान नाज़िर साहिब आला सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान ने शुक्रिया अहबाब पेश करते हुए मुक़ामी तौर पर अंतिम दुआ करवाई।

इसके बाद जलसा सालाना क़ादियान 2022 की ख़ूबसूरत झलकियाँ बसूरत डाकूमैंटरी एम.टी. ए इंटरनैशनल से दिखाई गईं जिसे तमाम हाज़िरीन-ए-जलसा गाह में बैठे हुए पूरे ज़ौक़-ओ-शौक़ और इन्हिमाक से सुनते और देखते रहे। यह एक डाकूमेंट्री थी जिस में तीनों दिन के जलसा गाह के प्रोग्रामों के इलावा जलसा सालाना के इंतेज़ामात, मेहमानों की आमद और उनका जोश और जज़बा, नुमाइशें और क़ादियान के मुक़द्दस मुक़ामात की झलकियाँ भी दिखाई गईं।

लंदन से नशरियात

हसब-ए-साबिक़ इस वर्ष भी सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जलसा सालाना क़ादियान के आज के अंतिम इजलास से हाज़िरीन को अज़राह-ए-शफ़क़त ख़िताब करना था। इस के लिए लंदन में बाक़ायदा स्टेज बनाया गया था और इस पर वैसा ही बैनर लगाया गया था जैसा कि क़ादियान के स्टेज पर लगाया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हिन्दुस्तानी वक़्त के मुताबिक़ ठीक 4 बजे जलसा-ए-गाह के हाल में तशरीफ़ लाए और स्टेज पर रौनक अफ़रोज़ हुए। तिलावत क़ुरआन-ए-करीम श्रीमान फ़िरोज़ आलम साहिब ने की और तिलावत शूदा आयात का उर्दू अनुवाद भी पेश किया। नज़्म श्रीमान नासिर अली उसमान ने पेश की। इसके बाद नारा-ए-तकबीर की पुरजोश और वलवला अंगेज़ सदाओं में सय्यदना अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ डाइस पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए और निहायत बसीरत अफ़रोज़ ख़िताब फ़रमाया।

ख़ुलासा ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

तशह्हुद, ताव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से क़ादियान के जलसा सालाना का आख़िरी दिन है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ये तीन दिन अल्लाह तआला की बरकात समेटते हुए गुज़र गए। कुछ अफ्रीकन देशों जिन में नाईजेरिया, आवरी कोस्ट, गिनी बसाऊ, गिनी कनाकरी, टोगो, बुर्कीना फासो, माली और ज़िमबावे शामिल हैं यहां भी इन दिनों में जलसा सालाना हो रहा है। और अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से ऐम.टी.ए के ज़रीया हमें एक दूसरे को देखने और सुनने की भी तौफ़ीक़ दी है। एक ही वक़्त में समस्त मुल्क मेरी बातें सुन रहे हैं और देख भी रहे हैं और हम उनको देख रहे हैं। यह भी अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अपने वादे को पूरा करने का इज़हार है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस जलसा का उद्देश्य दीनी और रुहानी और अख़लाक़ी तरक़्क़ी वर्णन फ़रमाया और इस पर बहुत शिद्दत से ज़ोर दिया। यही उद्देश्य है जिसके हुसूल के लिए आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दुनिया के हर मुल्क में जहां जमाअत अहमदिया बाक़ायदा क़ायम है जलसा सालाना आयोजित होता है। 1891 ई. के मुख़्तसर जलसा में 75 अफ़राद शामिल थे और जो चंद घंटों में ख़त्म हो गया था। और 1892 ई. के बाक़ायदा जलसा में 327 अफ़राद शामिल हुए। आज अल्लाह तआला के फ़ज़लों की बारिश इस क़दर है कि अल्लाह तआला हर मुल्क में हमें हज़ारों की संख्या में शामिल होने वाले दिखा रहा है। क्या यह अल्लाह तआला की सहायता का और इस के वादों का जो उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए सबूत नहीं है। निसंदेह हे। अगर एतराज़ करने वालों और अक़ल के अँधों की आँखें बंद न हों तो यही एक बात उन्हें अल्लाह तआला की ताईद-ओ-नुसरत और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई दिखाने के लिए काफ़ी है। बहरहाल उनको नज़र आए या न आए यह अल्लाह तआला की मदद हैं अल्लाह तआला का फ़ज़ल है। अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादों का पूरा होना है जिसके नज़्ज़ारे हम आज देख रहे हैं। यह सिर्फ़ मुँह की बात नहीं, सब दुनिया देख रही है, कैमरे की आँख और टी.वी की स्क्रीन हमें ये नज़्ज़ारे दिखला रही है। लेकिन अल्लाह तआला के इस फ़ज़ल-ओ-एहसान पर हमारी क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं। हम जलसा में शामिल होने के लिए जमा तो हो गए, दुनिया में मुख़्तलिफ़ जगहों पर बैठे हुए सुन भी रहे हैं उस के नज़्ज़ारे भी देख रहे हैं लेकिन हमें इस फ़ज़ल से फ़ैज़ उठाने और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपनी ज़िम्मेदारियाँ भी अदा करनी होंगी और अपने अह्द और अपने वादे को जो हमने जमाअत में शामिल हो कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किया है पूरा करना होगा। इस के लिए हमें अपने अंदर पाक तबदीलीयां पैदा करनी होंगी।

जलसा सालाना के हवाले से आइद होने वाली ज़िम्मेदारियों की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हमने अपनी हालतों को अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्मों और उस के मुताबिक़ करने और शरायत बैअत की पासदारी करने काअहद किया है। इन शरायत बैअत में से दूसरी शर्त बैअत के हवाले से कुछ बातें करूँगा। अगर उसके मुताबिक़ हम अपनी ज़िंदगीयों को ढाल लें तो अपने अंदर भी और दुनिया में भी एक बड़ा इंकेलाब पैदा कर सकते हैं। हमने जो अह्द हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किया है इस की दूसरी शर्त यह है कि

"झूठ और ज़ना और बदनज़री और हर एक फ़िस्क़-ओ-फ़ुजूर और ज़ुलम और ख़ियानत और फ़साद और बग़ावत के तरीक़ों से बचता रहेगा और नफ़सानी जोशों के वक़्त उनका मग़लूब नहीं होगा अगरचे कैसा ही जज़बा पेश आवे।"

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : इस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नौ बुराईयों

का वर्णन कर दिया है और यह बुराईयां ऐसी हैं जिनको छोड़ने से इन्सान रुहानी और अख़लाक़ी तौर पर तरक़्क़ी कर सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मज़कूरा बाला बुराईयों से बचने के बारे में क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस मुबारका में जो अहकामात वर्णन हुए हैं उन्हें वर्णन करने के बाद इस ताल्लुक़ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात भी पेश फ़रमाए और मौजूदा हालात में इन बुराईयों ने इन्सानी अख़लाक़ पर जो इंतेहाई ज़हरीला असर छोड़ा है, और उन बुराईयों से फ़ी ज़माना बचने की किस क़दर एहमीयत और ज़रूरत है, इस पर आपने तफ़सीली डाली।

हुज़ूर अनवर ने झूठ के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि सबसे अहम बात हमें यह याद रखनी चाहिए कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत ख़ुदा की बादशाहत दुनिया में क़ायम करने के लिए की है। अगर हमने झूठ का सहारा लेना शुरू कर दिया तो फिर हम ख़ुदा की बादशाहत क़ायम करने की बजाय शैतान की बादशाहत दुनिया में क़ायम करने वाले बन रहे होंगे। अतः बहुत फ़िक्र और सोचने का मुक़ाम है।

फिर व्यभिचार से बचने के विषय मे फ़रमाया कि आजकल के ज़माने में तो मीडीया ने उसके फैलाने की समस्त हदें तोड़ दी हैं। इन फ़ह्शा की तरवीज भी असल में दहरियत फैलाने वालों का एजंडा है जो इन्सान को ख़ुदा तआला से और मज़हब से दूर ले जाना चाहते हैं। अतः हमें बहुत कोशिश से इस जिहाद में भी हिस्सा लेना होगा।

फिर बदनज़री से बचने के मुताल्लिक़ वर्णन करते हुए फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं, क़ुरआन शरीफ़ में यह भी तालीम है कि बदन के उन तमाम सुराख़ों को महफ़ूज़ रखें जिनकी राह से बदी दाख़िल हो सकती है। इस हुक्म की वुसअत केवल ज़ाहिरी तौर पर देखने तक नहीं है, बल्कि आजकल जो मीडीया दिखाता है, या कम्पयूटर है, या टी.वी पर जो ग़लत और नंगे प्रोग्राम आते हैं इन तक भी इस हुक्म की वुसअत फैली हुई है। अतः ऐसे प्रोग्रामों के देखने से भी हमें एहतियात करनी चाहिए। नौजवानों को खासतौर पर इस तरफ़ तवज्जा देना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इस ताल्लुक़ में तो बाअज़ बड़ों की भी शिकायात आती हैं। अगर अल्लाह तआला की रज़ा हमने हासिल करनी है तो फिर इस क़दर बारीकी में जा कर हमें अपनी इस्लाह करनी होगी और अपने बच्चों को भी समझाना होगा।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया फिर एक बुराई जिससे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को खासतौर बचने की तलक़ीन फ़रमाई है और उसे शरायत बैअत में रख कर अह्द लिया है वह है फ़िस्क़-ओ-फ़ुजूर। फ़रमाया यह फ़िस्क़ आजकल दुनिया में हर जगह हर शहर में फैला हुआ है। अतः हमें अपनी और अपने बच्चों की इस लिहाज़ से जायज़े लेने की ज़रूरत है।

फ़रमाया : फिर जिस बात पर हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अह्द बैअत किया वह ख़ियानत न करना है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ख़ियानत, हर किस्म के ज़ुलम, फ़साद और बग़ावत के तरीक़ और नफ़सानी जोशों से हमेशा बचते रहने से मुताल्लिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात पेश फ़रमाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

वे बात मानो जिस पर अक़्ल और कॉन्शस की गवाही है। और ख़ुदा की किताबें इस पर इत्तिफ़ाक़ रखती हैं। ख़ुदा को ऐसे तौर से न मानो जिससे ख़ुदा की किताबों में फूट पड़ जाए। व्यभिचार न करो, झूठ न बोलो और बदनज़री न करो और हर एक फ़िस्क़ और फ़ुजूर और ज़ुलम और ख़ियानत और फ़साद और बग़ावत की राहों से बचोगे। और नफ़सानी जोशों से मग़लूब मत हो और पंज वक़्त नमाज़ अदा करो कि इन्सानी फ़ितरत पर पंज तौर पर ही इन्क़िलाब आते हैं और अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शुक्रगुज़ार रहो। इस पर दुरूद भेजो क्योंकि वही है जिसने तारीकी के ज़माने के बाद नए सिरे से ख़ुदा शनासी की राह सिखाई है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अतः यह है हमारा लाहे-अमल। अगर हम उस के मुताबिक़ अमल कर लें तो हम एक अज़ीम इन्क़लाब बरपा कर सकते हैं। हर एक शर्त बैअत अपने अंदर बेपनाह हिकमतें रखे हुए है। एक अहमदी को अपने ईमान को सैक़ल करने के लिए उन पर ग़ौर करते रहना चाहिए तभी हम बैअत के हक़ अदा करने वाले बन सकेंगे। जैसा कि मैंने कहा वक़्त की रियाइत से मैंने सिर्फ एक शर्त बैअत को वर्णन किया है। अल्लाह तआला इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अतः जलसा सालाना में शामिल होने वाले चाहे वह क़ादियान में शामिल होने वाले हैं या अफ़्रीक़ा के देशों के, जहां जलसे हो रहे हैं वहां बैठे हुए जलसे सुन रहे हैं या वह सुनने वाले जो दुनिया में मुख़्तलिफ़ जगहों पर बैठे हैं और एम.टी.ए के ज़रीया से जलसा सुन रहे हैं हम सब के लिए एक लाहे अमल है यह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आज लजना इमाइल्लाह की तंज़ीम को बने हुए भी सौ साल हो गए हैं लजना को भी याद रखना चाहिए कि यह जायज़ा लें कि इस सौ साल में किस हद तक लजना ने अपने अंदर पाक तबदीली पैदा की है और बैअत का हक़ अदा करने वाला अपने आपको बनाया और कोशिश की और किस हद तक अपने बच्चों और अपनी नसल को बैअत का हक़ अदा करने और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दआवी से जोड़ने वाला और मानने वाला बनाया है। अगर हमने उसके मुताबिक़ अपनी नसलों की उठान की है तो यक़ीनन लजना इमाइल्लाह की मेम्बरात अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ार बंदियां हैं। अतः यह जायज़े आज लेने की ज़रूरत है और जहां कमियां रह गई हैं वहां एक अज़्म के साथ अह्द करें कि हमने लजना की अगली सदी में इस अह्द के साथ क़दम रखना है कि हम अपनी नसलों को अह्द बैअत का हक़ अदा करने वाला बनाएँगी। अल्लाह तआला सबको इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

इसी तरह हर शामिल जलसा जो किसी भी तरह जलसा में शामिल है यह अह्द करे कि हमने पाक तबदीली अपने अंदर पैदा करनी है और अह्द बैअत को अपनी तमाम-तर सलाहियतों के साथ निभाना है। अल्लाह तआला हम सबको इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

क़ादियान में जो जलसा की हाज़िरी थी जो कुछ देर पहले आ गई थी उस के मुताबिक़ वहां तक़रीबन साढ़े चौदह हज़ार लोग मौजूद हैं और सैंतीस देशों की वहां नुमाइंदगी हो रही है। अल्लाह तआला उनको जलसा से फ़ैज़ पाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। दुनिया में हर जगह जहां लोग बैठे हुए हैं जिन मुल्कों के मैंने नाम लिए हैं अल्लाह तआला उनको भी जलसा से फ़ैज़ पाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। दुआ कर लें अल्लाह तआला सबको अपनी हिफ़्ज़-ओ-अमान में रखे।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और एम.टी ए की वसातत से पूरी दुनिया से अहमदी इस दुआ में शामिल हुए। इसके बाद कादियान से मर्दाना और लजना जलसा गाह से तराने पेश किए गए। आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने मस्जिद मुबारक इस्लाम आबाद में मौजूद अहबाब की हाज़िरी 1404 और बैतूल फ़तूह की हाज़िरी 1200 और मस्जिद फ़ज़ल की हाज़िरी 400 बताई और फ़रमाया कि यू.के दीगर मराकज़ में भी इजतेमाई तौर पर अहबाब शामिल हैं इस तरह यू.के ही में हज़ारों की संख्या में शामिल होने वाले हैं।

अल्लाह तआला इस जलसा के जुमला फ़्यूज़ और बरकात को हमारी ज़िंदगियों का मुस्तक़िल हिस्सा बनाए और नसलन बाद नस्ल उस का फ़ैज़ हमेशा जारी व सारी रहे। आमीन

★ ★ ★

महिलाओं का जलसा

तिथि 25 दिसंबर 2022 जलसा सालाना क़ादियान के तीसरे दिन के पहले सैशन में लजना इमाइल्लाह भारत ने अपना जलसा आयोजित किया। इजलास की सदारत श्रीमाना बुशरा तुय्यबा ग़ौरी साहिबा एज़ाज़ी मैंबर लजना इमाइल्लाह भारत ने की। श्रीमाना अमतुल रहमान ख़ादिम साहिबा ने तिलावत की और उर्दू अनुवाद पेश किया। श्रीमाना अमतुल बासित बुशरा साहिबा ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पाकीज़ा मंजूम कलाम पढ़ा। इजलास की पहली तक़रीर श्रीमाना डाक्टर मंसूरा अलादीन साहिबा सदर लजना इमाइल्लाह क़ादियान ने "तर्बीयत औलाद और अहमदी माओं की ज़िम्मेदारियाँ, मुहब्बत इलाही, नमाज़, तिलावत, ख़िलाफ़त से मुहब्बत और आला अख़लाक़" के अनवान पर की। इस के बाद श्रीमाना मर्यम सिद्दीक़ा साहिबा आफ़ कडलाई केरला ने नज़म "बढ़ती रहे ख़ुदा की मुहब्बत ख़ुदा करे" पढ़ी। इजलास की दूसरी तक़रीर श्रीमाना बुशरा पाशा साहिबा ने "लजना इमाइल्लाह की नई सदी का आग़ाज़ और हमारी ज़िम्मेदारियाँ" के अनवान पर की। इस के बाद केरला की मेम्बरात ने बज़बान मलयालम तराना पेश किया। इसके बाद सदर इजलास ने सालाना इजतेमा लजना इमाइल्लाह और नास्रातुल अहमदिया भारत के अवसर पर मौसूल होने वाला हुज़ूर अनवर का बसीरत अफ़रोज़ पैग़ाम पढ़ कर सुनाया और दुआ करवाई।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

"हमारी जमाअत के लिए इसी बात की ज़रूरत है कि उनका ईमान बढ़े। ख़ुदा तआला पर सच्चा यक़ीन और मार्फ़त पैदा हो। नेक-आमाल में सुस्ती और कमी न हो क्योंकि .. अगर आमाल-ए-सालहा की क़ुव्वत पैदा न हो और नेकियों मे आगे बढ़ने के लिए जोश न हो तो फिर हमारे साथ ताल्लुक़ पैदा करना बेफ़ाइदा है।" (हज़रत मसीह माहूद अलैहिस्सलाम)

"जो अमन के वक़्त ख़ुदा तआला को नहीं भुलाता ख़ुदा तआला उसे मुसीबत के वक़्त नहीं भुलाता और जो अमन के ज़माना को ऐश में बसर करता है और मुसीबत के वक़्त दुआएं करने लगता है तो उस की दुआएं भी क़बूल नहीं होतीं"

यह बुनियादी नुक्ता है कि हमें कभी अपनी इबादतों और दुआओं में सुस्त नहीं होना चाहिए

"दुआ के लिए सबसे प्रथम इस बात की ज़रूरत"

"ख़ुदा तआला जो करीम है और हया रखता है जब देखता है कि उस का आजिज़ बंदा एक अरसा से उस के आस्ताना पर गिरा हुआ है तो कभी उस का अंजाम बद नहीं करता"

"ज़रूरी है कि जब ख़ुदा तआला के हुज़ूर नमाज़ में खड़े हो तो चाहिए कि अपने वजूद से आजिज़ी और इरादत मंदी का इज़हार करो"

"हर एक काम के लिए ज़माना होता है और सईद उस का इंतेज़ार करते हैं। जो इंतेज़ार नहीं करता और चश्म-ए-ज़दन मेँ चाहता है कि इस का नतीजा निकल आवे वह जल्दबाज़ होता है और बा-मुराद नहीं हो सकता"

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात-ए-आलीया की रोशनी में दुआ की हक़ीक़त, इस के आदाब, हमारी ज़िम्मेदारी, उसकी ज़रूरत और अल्लाह तआला पर यक़ीन के बारे में बसीरत अफ़रोज़ वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 दिसम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आजकल तो विशेषता ख़ुदा तआला और दुआ के मुताल्लिक़ प्रश्न उठते हैं जबकि बाक़ायदा एक मंसूबा बंदी के तहत नास्तिकता के समर्थक भरपूर हमला ख़ुदा तआला की ज़ात पर और मज़हब पर कर रहे हैं

विभिन्न माध्यमों से इन्सान को ख़ुदा और मज़हब से दूर करने की कोशिश की जा रही है। शैतान इन्सान से हमदर्दी का लुबादा ओढ़ कर उसे दीन और ख़ुदा तआला से दूर करने की कोशिश कर रहा है। ऐसे हालात में हमारे लोगों पर भी बाअज़ जगह और कई दफ़ा यह शैतानी ख़्यालात असर डाल देते हैं या दुनिया-दारों और मज़हब के ख़िलाफ़ चलने वालों की बातें उन्हें मज़हब के बारे में और ख़ुदा तआला के बारे में इबादत के बारे में बेचैनियां पैदा करनी शुरू कर देती हैं। शुबहात दिल में पैदा होने शुरू हो जाते हैं जो कम इलम होते हैं। अगर कभी किसी इबतेला से गुज़रे या नाकामियों का सामना करना पड़ा तो कमज़ोर ईमान वालों और कम इलम वालों को फ़ौरन ये ख़्याल आने लग जाता है कि या तो मज़हब ग़लत है जिस पर हम लोग क़ायम हैं और असल में इस की कोई हक़ीक़त नहीं है या ख़ुदा तआला की ज़ात ऐसी नहीं कि रहम करते हुए दुआएं सुने और हमें इस इबतेला और इमतेहान से निकाले या ख़ुदा तआला ने नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हम पर ज़ुलम किया है जो हम इस हालत से गुज़र रहे हैं। बावजूद दुआओं के हमारी परेशानियाँ दूर नहीं हो रहीं। ग़रज़ कि इस किस्म के बहुत से सवाल बाअज़ ज़हनों में उठते हैं विशेषता उनके जिनकी नज़र केवल दुनियावी चीज़ों पर रहती है। कुछ लोग मुझे भी लिख देते हैं या अपने हालात बताते हुए सवाल पूछ रहे होते हैं तो लग रहा होता है कि उनके दिलों में अल्लाह तआला की ज़ात पर वह ईमान नहीं जो होना चाहिए और जिस माहौल में वे रह रहे हैं इस में रहते हुए ज़रा सा भी इबतेला उन पर आए तो मनफ़ी सोचें पैदा हो जाती हैं या शकूक सर उभारने लग जाते हैं हालाँकि चाहिए तो यह कि अपनी हालतों पर ग़ौर करें। देखें कि हम किस हद तक अल्लाह तआला का हक़ अदा करने की कोशिश कर रहे हैं। किस हद तक हम अपनी इबादतों को सँवार कर अदा करने की कोशिश कर रहे हैं। किस हद तक हमने अपनी दुआओं के मयार को ऊंचा किया है। अल्लाह तआला पर ईमान की हमारी क्या हालत है? बहरहाल आज मैं दुआ के मज़मून को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में वर्णन करूँगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरात और इर्शादात में इस बारे में बहुत कुछ हमें नज़र आता है, लिटरेचर में है। बहरहाल

मैं चंद बातें वर्णन करूँगा जिनसे दुआ की हक़ीक़त, उस के आदाब, हमारी ज़िम्मेदारी, उस की ज़रूरत और अल्लाह तआला पर यक़ीन के बारे में कुछ वज़ाहत होती है बल्कि वज़ाहत यक़ीनी तौर पर होती है।

इस तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए कि हमें अच्छे हालात में भी अल्लाह तआला की इबादत और दुआओं की तरफ़ तवज्जा रखनी चाहिए ताकि मुश्किलात में भी हमारी सुनी जाएं।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अल्लाह का रहम है उस शख़्स पर जो अमन की हालत में इसी तरह डरता है जिस तरह किसी मुसीबत के वारिद होने पर डरता है।

जो अमन के वक़्त ख़ुदा तआला को नहीं भुलाता ख़ुदा तआला उसे मुसीबत के

वक़्त नहीं भुलाता और जो अमन के ज़माना को ऐश में बसर करता है और मुसीबत के वक़्त दुआएं करने लगता है तो उस की दुआएं भी क़बूल नहीं होतीं।

जब अज़ाब-ए-इलाही का नुज़ूल होता है तो तौबा का दरवाज़ा बंद हो जाता है।

अतः क्या ही सईद वह है जो अज़ाब-ए-इलाही के नुज़ूल से पेशतर दुआ में व्यस्त रहता है, सदक़ात देता है और उम्र-ए-इलाही की ताज़ीम और अल्लाह की मखलूक पर शफ़क़त करता है। अपने आमाल को सँवार कर बजा लाता है। यही सआदत के निशान हैं। "फ़रमाया" दरख़्त अपने फलों से पहचाना जाता है इसी तरह सईद और "बुरे की पहचान भी आसान होती है।

(.मल् फ़ूज़ात भाग चहारुम पृष्ठ 229-230 ऐडीशन 1984 ई)

अतः एक हक़ीक़ी मोमिन का यह काम है कि अपने अच्छे हालात में ख़ुदा तआला के हक़ को और उस की मख़लूक़ के हक़ को कभी न भूले और अगर वह यह हक़ अदा कर रहा है तो फिर मुश्किलात के दौर से ख़ुदा तआला उसे ख़ुद निकालता है, उस की दुआएं क़बूल करता है। अतः यह बुनियादी नुक्ता है कि हमें कभी अपनी इबादतों और दुआओं में सुस्त नहीं होना चाहिए।

दुनियावी मसरुफ़ियात हमें अल्लाह तआला के हक़ अदा करने से वंचित करने वाली न हों।

फिर इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि ख़ुदा तआला से मांगते वक़्त क्या हालत होनी चाहिए और इस के क्या आदाब हैं और यह आदाब ख़ुद अल्लाह तआला ने हमें किस तरह सिखाएं हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं ख़ुदा तआला से मांगने के वास्ते अदब का होना ज़रूरी है और अक़लमंद जब कोई शैय बादशाह से तलब करते हैं तो हमेशा अदब को मद्द-ए-नज़र रखते हैं। इसी लिए सूरः फ़ातिहा में ख़ुदा तआला ने اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ सिखाया है कि किस तरह मांगा जाए और इस में सिखाया है कि अर्थात सब तारीफ़ ख़ुदा की ही है जो रब है सारे जहान का। सबसे पहले الْعٰلَمِیْنَ अल्लाह तआला की तारीफ़ करो। अलर्रहमान है अर्थात बिना मांगे और सवाल किए देने वाला है। फिर अलर्रहीम है अर्थात इन्सान की सच्ची मेहनत पर समरात-ए--हसना मुरत्तिब करने वाला है। "सच्ची मेहनत'' यह ग़ौर करने वाला शब्द है। अल्लाह तआला रहीम है। सच्ची मेहनत पर फल प्रदान फ़रमाता है और सच्ची मेहनत के मयार वे हैं जो अल्लाह तआला ने ख़ुद बयान फ़रमाए हैं। अल्लाह तआला जज़ा सज़ा مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ की राह में एक जिहाद करना पड़ता है। फिर फ़रमाया। उसी के हाथ में है, चाहे रखे चाहे मारे। और जज़ा सज़ा आख़िरत की भी और इस दुनिया की भी उस के हाथ में है। सिर्फ यह नहीं कि आख़िरत की जज़ा सज़ा। इस दुनिया में भी जो काम होते हैं उनके फ़ैसले भी अल्लाह तआला के हाथ में हैं। फ़रमाया कि जब इस क़दर तारीफ़ इन्सान करता है तो उसे ख़्याल आता है कि कितना बड़ा ख़ुदा है जो कि रब है, रहमान है, रहीम है, उसे ग़ायब मानता चला आ रहा है और उसे हाज़िर जान कर पुकारता है। ये बातें तो ग़ैब की हैं। फिर ये समझता है कि اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَاِیَّاكَ अल्लाह तआला हाज़िर है और हाज़िर जान कर क्या पुकारता है। हम तेरी ही इबादत करते हैं या हम इबादत करना चाहते हैं और तुझसे ही نَسْتَعِیْنُ अर्थात ऐसी राह जो कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ उस के लिए मदद मांगते हैं। बिल्कुल सीधी है, इस में किसी किस्म की कजी नहीं है। एक राह अँधों की होती है कि मेहनतें कर करके थक जाते हैं और नतीजा कुछ भी नहीं निकलता और एक वह राह صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ कि मेहनत करने से इस पर नतीजा मुरत्तिब होता है। फिर आगे अर्थात उन लोगों की राह जिन पर तू ने इनाम किया और वह वही स्रात-ए- عَلَیْهِمْ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ-मुस्तक़ीम है जिस पर चलने से इनाम मुरत्तिब होते हैं। फिर और न उनकी जो दूर وَلَا الضَّآلِّیْنَ न उन लोगों की जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और से कुल दुनिया اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ जा पड़े हैं, गुमराह हो गए हैं। फ़रमाया कि और दीन के कामों की राह मुराद है उदाहरणतः एक तबीब है जब किसी का ईलाज करता है तो उसे एक स्रात-ए-मुस्तक़ीम हाथ नहीं आवे, ईलाज नहीं कर सकता। इसी तरह तमाम वकीलों और हर पेशा और इलम की एक स्रात-ए-मुस्तक़ीम है कि जब वह हाथ आ जाती है तो फिर काम आसानी से हो जाता है। इसलिए दुनियावी कामों में भी स्रात-ए-मुस्तक़ीम की तलाश होनी चाहिए और वह इसी सूरत में हो सकती है जब अल्लाह तआला से हो।

आप जिस मजलिस में बैठे यह वर्णन फ़र्मा रहे थे वहां एक साहिब ने यह ऐतराज़ किया।

अंबिया को इस दुआ की क्या ज़रूरत थी। यह तो आम आदमियों के लिए दुआ है। अंबिया को इस दुआ की क्या ज़रूरत है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम क्यों करते थे, वे तो पहले से ही स्रात मुस्तक़ीम पर होते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि वह यह दुआ प्रगति और तो आख़िरत में मोमिन اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ दर्जात के लिए करते हैं बल्कि यह भी माँगेंगे क्योंकि जैसे अल्लाह तआला की कोई हद नहीं है इसी तरह उस के दर्जात और मुरातिब की तरक़्क़ी की भी कोई हद है।

(.माख़ूज़ अज़ मल् फ़ूज़ात भाग चहारुम पृष्ठ 399-400 ऐडीशन 1984 ई)

अतः यह हैं वह आदाब जिनको सामने रखकर नमाज़ पढ़ी जाए, दुआ की जाए तो इन्सान एक ऐसी कैफ़ीयत में से गुज़रता है जहां उसे ख़ुदा तआला का क़ुरब और अपनी हाजात वर्णन करने का सही इदराक हासिल होता है।

फिर दुआ और इस के आदाब के बारे मज़ीद वज़ाहत फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं : "दुआ बड़ी अजीब चीज़ है परंतु अफ़सोस यह है कि न दुआ कराने वाले आदाब--ए-दुआ से वाक़िफ़ हैं और न इस ज़माना में दुआ करने वाले इन तरीक़ों से वाक़िफ़ हैं जो क़ुबूलियत-ए-दुआ के होते हैं। बल्कि असल तो यह है कि दुआ की हक़ीक़त ही से बिल्कुल अजनबियत हो गई है। कुछ ऐसे हैं जो सिरे से दुआ के इंकारी हैं और जो दुआ के मुनकिर तो नहीं परंतु उनकी हालत ऐसी हो गई है कि चूँकि उनकी दुआएं बाज्जाह आदाब-ए-दुआ से न वाक़फ़ीयत के क़बूल नहीं होती हैं क्योंकि दुआ अपने असली अर्थों में दुआ होती ही नहीं।" जो असली मअनी हैं दुआ के इस तरह दुआ नहीं होती इसलिए क़बूल नहीं होती "इस लिए वे मुनकरीन-ए-दुआ से भी गिरी हुई हालत में हैं" ऐसे लोग। "इन की अमली हालत ने दूसरों को दहरियत के क़रीब पहुंचा दिया है।

दुआ के लिए सबसे प्रथम इस अमर की ज़रूरत है कि दुआ करने वाला कभी थक कर मायूस न हो जाए और अल्लाह तआला पर यह गलत गुमान न कर बैठे'' बदज़नी न करे अल्लाह तआला पर" कि अब कुछ भी नहीं होगा।

बाज़-औक़ात देखा गया है कि इस क़दर दुआ की गई कि जब उद्देश्य का कोंपल खिलने के क़रीब होता है। दुआ करने वाले थक गए हैं। जिसका नतीजा नाकामी और नामुरादी हो गया है और इस नामुरादी ने यहां तक बुरा असर पहुंचाया कि दुआ की तासीरात का इंकार शुरू हुआ और रफ़्ता-रफ़्ता इस दर्जा तक नौबत पहुंच जाती है कि फिर खुदा का इंकार कर बैठते हैं।" दहरियत ग़ालिब आ जाती है और कह देते हैं कि अगर ख़ुदा होता और वह दुआओं को क़बूल करने वाला होता तो इस क़दर अरसा-ए-दराज़ तक जो दुआएं की गई क्यों क़बूल नहीं हुईं? परंतु ऐसा ख़्याल करने वाला और ठोकर खाने वाला इन्सान अगर अपने अदम-ए-इस्तिक़लाल और तलु-व्वोन को सोचे तो उसे मालूम हो जाए कि सारी नामुरादियां उस की अपनी ही जल्द-बाज़ी और शिताब कारी का नतीजा हैं।" आज यहां, कल वहां। मुस्तक़िल मिज़ाजी कोई नहीं। जल्द-बाज़ी तबीयत में है तो वह तो इन्सान की अपनी गलतियां हैं। अगर मुस्तक़िल मिज़ाजी हो, जल्द-बाज़ी न हो, ईमान मज़बूत हो तो कभी यह हालत पैदा हो ही नहीं सकती। अगर दुआ क़बूल नहीं हुई तो यह तो इस जल्द-बाज़ी का नतीजा है। फ़रमाया "जिन पर ख़ुदा की कुव्वतों और ताक़तों के मुताल्लिक़ बदज़नी और "ना-मुराद करने वाली मायूसी बढ़ गई। अतः कभी थकना नहीं चाहिए।

(.मल् फ़ूज़ात भाग चहारुम पृष्ठ 415 से 417 ऐडीशन 1984 ई)

आप दुनियावी मिसालों के साथ दुआ करने वाले के सब्र की मिसाल इस तरह दी है। फ़रमाते हैं कि देखो "दुआ की ऐसी ही हालत है जैसे एक ज़मींदार बाहर जा कर अपने खेत में एक बीज बो आता है। अब बज़ाहिर तो यह हालत है कि उसने अच्छे भले अनाज को मिट्टी के नीचे दबा दिया। इस वक़्त कोई क्या समझ सकता है कि यह दाना एक उम्दा दरख़्त की सूरत में नशव-ओ-नुमा पा कर फल लाएगा। बाहर की दुनिया और ख़ुद ज़मींदार भी नहीं देख सकता कि यह दाना अंदर ही अंदर ज़मीन में एक पौधे की सूरत इख़्तेयार कर रहा है परंतु हक़ीक़त यही है कि थोड़े दिनों के बाद वह दाना मिल कर अंदर ही अंदर पौधा बनने लगता है और तैयार होता रहता है। यहां तक कि उस का सब्ज़ा ऊपर निकल आता है।" बीज की एक ख़ुसूसीयत है पहले उस की जड़ें निकलती हैं, जड़ें ज़मीन में पैवस्त हो जाती हैं फिर बाहर कोन्पलों निकलनी शुरू हो जाती हैं।" और दूसरे लोग भी इस को देख सकते हैं। अब देखो वह दाना जिस वक़्त से ज़मीन के नीचे डाला गया था दरअसल उसी समय से वह पौधा बनने की तैयारी करने लग गया था मगर ज़ाहिर बैन निगाह इस से कोई ख़बर नहीं रखती और अब जबकि उस का सब्ज़ा बाहर निकल आया तो सबने देख लिया। लेकिन एक नादान बच्चा उस वक़्त ये नहीं समझ सकता कि इस को अपने वक़्त पर फल लगेगा।' अब पौदा निकल आया, अब फल लगने का मरहला बाक़ी है। नादान बच्चा ये समझेगा कि इस को तो फल लग नहीं सकता ये छोटा सा है। ''वो ये चाहता है क्यों उसी वक़्त उस को फल नहीं लगता मगर अक़लमंद ज़मींदार ख़ूब समझता है कि इस के फल का कौनसा मौक़ा है। वो सब्र से इस की निगरानी करता और गौरव

पर्दाख़्त करता रहता है और इस तरह पर वो वक़्त आजाता है कि जब उस को फल लगता है और वो पक भी जाता है। यही हाल दुआ का है और बईंही इसी तरह दुआ नशव-ओ-नुमा पाती और मुसम्मर बसमरात होती है। जल्दबाज़ पहले ही थक कर रह जाते हैं और सब्र करने वाले मआल-अंदेश इस्तिक़लाल के साथ लगे रहते हैं।' दूर अंदेश लोग जो हैं, नतीजा को सब्र से देखने वाले लोग जो हैं वो मुस्तक़िल मिज़ाजी से अपने काम में लगे रहते हैं, दुआओं में लगे रहते हैं ''और अपने उद्देश्य 'को पा लेते हैं।

(.मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 417 ऐडीशन 1984 ई)

फिर दुआ करने वाले के सब्र के मयार को वर्णन फ़रमाते हुए आप मज़ीद फ़रमाते हैं कि "यह सच्ची बात है कि दुआ में बड़े बड़े मराहिल और मुरातिब हैं जिनकी न वाक़फ़ीयत की वजह से दुआ करने वाले अपने हाथ से वंचित हो जाते हैं। उनको एक जल्दी लग जाती है और वह सब्र नहीं कर सकते हालाँकि ख़ुदा तआला के कामों में एक तदरीज होती है।

देखो यह कभी नहीं होता कि आज इन्सान शादी करे तो कल को उस के घर बच्चा पैदा हो जावे हालाँकि वह क़ादिर है जो चाहे कर सकता है परंतु जो क़ानून और निज़ाम इस ने मुक़र्रर कर दिया है वह ज़रूरी है। पहले पौधे की नशो नुमा की तरह कुछ पता ही नहीं लगता।" पौधे, बूटे जिस तरह नशो नुमा पाते हैं पहले तो कुछ नहीं पता लगता इन्सान की या किसी भी जानवर की पैदाइश के वक़्त। अब इन्सान की मिसाल है कि "चार महीने तक कोई यक़ीनी बात नहीं कह सकता। फिर कुछ हरकत महसूस होने लगती है और पूरी मीयाद गुज़रने पर बहुत बड़ी तकालीफ़ बर्दाश्त करने के बाद बच्चा पैदा हो जाता है।" डाक्टर भी अब 12 हफ़्ते के बाद ही स्कैन कर के कुछ बताते हैं। तो बच्चे का पैदा होना बावजूद सब माडर्न टैक्नोलोजी के डाक्टरों को सही पता लगता है और सी वे भी उसी वक़्त स्कैन करते हैं जब 12 हफ़्ते गुज़र जाते हैं। इस ज़माने में जब आप वर्णन फ़र्मा रहे हैं उस वक़्त इतनी टैक्नोलोजी नहीं थी लेकिन इस के बावजूद एक कानून-ए-क़ुदरत के बारे में आप ने यह वज़ाहत फ़रमाई है। फ़रमाया कि "बच्चे का पैदा होना माँ का भी साथ ही पैदा होना होता है।" फिर बच्चा जब पैदा होता है तो साथ ही, यह नहीं है कि आराम से पैदा हो गया। माँ का भी नए सिरे से पैदा होना होता है। फ़रमाया कि "मर्द शायद उन तकालीफ़ और मसायब का अंदाज़ा नहीं कर सकें जो इस मुद्दत-ए-हमल के मध्य औरत को बर्दाश्त करनी पड़ती हैं। परंतु यह सच्ची बात है कि औरत की भी एक नई ज़िंदगी होती है। अब ग़ौर करो कि औलाद के लिए पहले एक मौत ख़ुद उस को क़बूल करनी पड़ती है। तब कहीं जा कर वह इस ख़ुशी को देखती है। इसी तरह पर दुआ करने वाले के और जल्द-बाज़ी को छोड़कर सारी तकलीफों को تَلَوُّن लिए ज़रूरी होता है कि वह बर्दाश्त करता रहे।" जल्द-बाज़ी न करे, तकलीफों को बर्दाश्त करे, दुआ में लगा रहे।" और कभी भी यह वहम न करे कि दुआ क़बूल नहीं हुई। आख़िर आने वाला ज़माना आ जाता है। दुआ के नतीजा के पैदा होने का वक़्त पहुंच जाता है जबकि गोया मुराद का पैदा बच्चा होता है। दुआ को पहले ज़रूरी है कि इस मुक़ाम और हद तक पहुंचाया जाए। जहां पहुंच कर वह नतीजाख़ेज़ साबित होती है।" दुआ को इस मयार तक ले जाना पहले ज़रूरी है। फ़रमाया कि "जिस तरह पर आतिशी शीशे के नीचे कपड़ा रख देते हैं और सूरज की शुवाएं इस शीशा पर आकर जमा होती हैं और उनकी हरारत और शिद्दत इस मुक़ाम तक पहुंच जाती है जो इस कपड़े को जिला दे। फिर यकायक वे कपड़ा जल उठता है। इस तरह पर ज़रूरी है कि दुआ इस मुक़ाम तक पहुंचे जहां इस में वह क़ुव्वत पैदा हो जाए कि नामुरादियों को जला दे और "मकसद-ए-मुराद को पूरा करने वाली साबित हो जाए।

(.मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 418 ऐडीशन 1984 ई)

अतः हर दुआ करने वाले को अपने जायज़े से ख़ुद ही पता चल जाएगा कि उसने यह मयार हासिल किया है कि नहीं अल्लाह तआला के बारे में आप फ़ारसी मिसरा की मिसाल देते हुए फ़रमाते हैं

پیدا است ندا را کہ بلند است جَنَابَت

कि पुकार से ज़ाहिर है कि तेरी बारगाह बहुत बुलंद है

फ़रमाया कि "मुद्दत दराज़ तक इन्सान को दुआओं में लगे रहना पड़ता है। आख़िर ख़ुदा तआला ज़ाहिर कर देता है। मैं ने अपने तजुर्बा से देखा है और पिछले रास्तबाज़ों का अनुभव भी इस पर शहादत देता है कि अगर किसी मुआमला में देर तक ख़ामोशी करे तो कामयाबी की उम्मीद होती है।" उम्मीद होती है कि दुआओं का मज़ीद मौक़ा मिल रहा है तो अल्लाह तआला कामयाबी अता फ़रमाएगा लेकिन जिस बात में जल्द जवाब मिल जाता है। अगर जवाब न में मिला है तो फिर वह होने वाला नहीं होता। फ़रमाया कि आम तौर पर हम दुनिया में देखते हैं कि एक सायल जब किसी के दरवाज़ा पर मांगने के लिए जाता है और निहायत इज़तेराब और आजिज़ी से मांगता है और कुछ देर तक झिड़कियां खा कर भी अपनी जगह से नहीं हटता। घरवाला उस को डाँटता है, झिड़कियां देता है लेकिन वह अपनी जगह से नहीं हिलता और सवाल किए ही जाता है तो आख़िर उस को यानी घर वाले को भी कुछ शर्म आही जाती है। चाहे कितना ही कंजूस क्यों न हो। फिर भी कुछ न कुछ सायल को दे ही देता है। तो क्या दुआ करने वाले का एक मामूली सायल जितना भी इस्तक़लाल नहीं होना चाहिए।

ख़ुदा तआला जो करीम है और हया रखता है जब देखता है कि उसका आजिज़ बंदा एक अरसा से उसके आस्ताना पर गिरा हुआ है तो कभी उस का अंजाम बद नहीं करता।

जैसे एक हामिला औरत चार पाँच माह के बाद कहे कि अब बच्चा पैदा क्यों नहीं होता और इस ख़ाहिश में कोई मस्क़त दवाई खाले तो उस वक़्त क्या बच्चा पैदा होगा। ज़ाए ही हो जाएगा बच्चा। या एक मायूसी बख़श हालत में वह ख़ुद मुबतला होगी? इसी तरह जो शख़्स क़बल अज़ वक़्त जल्दी करता है वह नुक़्सान ही उठाता है और न निरा नुक़्सान''उठाता है ''बल्कि ईमान को भी सदमा पहुंच जाता है। बाअज़ ऐसी हालत में दहरिया हो जाते हैं।" फ़रमाते हैं कि "हमारे गांव में एक नज्जार था। "तरखान था"उस की औरत बीमार हुई और आख़िर वह मर गई। उसने कहा अगर ख़ुदा होता तो मैं ने इतनी दुआएं की थीं वह क़बूल हो जातीं और मेरी औरत न मरती। इस तरह पर वह दहरिया हो गया। "फ़रमाया" लेकिन सईद अगर अपने सिदक़ और इख़लास से काम ले तो उस का ईमान बढ़ता और सब कुछ हो भी जाता है। ज़मीन की दौलतें ख़ुदा तआला के आगे क्या चीज़ हैं। वह एक दम में सब कुछ कर सकता है। "फ़रमाया" क्या देखा नहीं कि उसने इस क़ौम को जिसको कोई जानता भी नहीं था बादशाह बना दिया।" अरब के बद्दू क्या थे, क्या लोग थे, दुनिया पर हुकूमत की उन्होंने। "और बड़ी बड़ी सल्तनतों को उनका ताबे फ़रमान बना दिया और ग़ुलामों को बादशाह बना दिया। इन्सान अगर तक़्वा इख़तेयार करे, ख़ुदा तआला का हो जाए तो दुनिया में आला दर्जा की ज़िंदगी हो मगर शर्त यही है कि सादिक़ और जवाँ मरद हो कर दिखाए। दिल मुतज़लज़ल न हो और इस में कोई आमेज़िश रयाकारी और शिर्क की न हो। इबराहीम अलैहिस्सलाम में वह क्या बात क़रार दिया और ख़ुदा तआला ने इस اَبُوالحُنَفَاء और اَبُوالمِلّت थी जिसने उस को को इस क़दर अज़ीमुश्शान बरकतें दीं कि शुमार में नहीं आसकतीं। यही सिदक़ और इखलास था।

देखो इबराहीम अलैहिस्सलाम ने एक दुआ की थी कि इस की औलाद में से अरब में एक नबी हो। फिर क्या वह उसी वक़्त क़बूल हो गई? इबराहीम के बाद एक अरसा दराज़ तक किसी को ख़्याल भी नहीं आया कि इस दुआ का क्या असर हुआ। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत की सूरत में वह दुआ पूरी हुई "और फिर किस शान के साथ पूरी हुई।

(.मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 419-420 ऐडीशन 1984 ई)

अतः जैसा कि पहले भी वर्णन हो चुका है। सिर्फ तकलीफ़ में इन्सान दुआएं न करे बल्कि अल्लाह तआला ने जब कुशाइश दी हो, आसाइशें दी हों तब भी दुआएं करते रहना चाहिए।

इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि दुआ की क़बूलीयत के लिए जिस्म और रूह का आपस में ताल्लुक़ होना चाहिए और कैसा होना चाहिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "ज़ाहिरी नमाज़ और रोज़ा अगर उस के साथ इख़लास और सिदक़ न हो कोई ख़ूबी अपने अंदर नहीं रखता।" आए नमाज़ें पढ़ लें। रूह नहीं पिघल रही तो फिर कोई फ़ायदा नहीं है। "जोगी और सन्यासी भी अपनी जगह

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

बड़ी-बड़ी रियाज़तें करते हैं। अक्सर देखा जाता है कि इन में से बाअज़ अपने हाथ तक सुखा देते हैं।" हाथ खड़ा किया और कई कई दिन खड़ा ही रखा और हाथ सूख जाता है।" और बड़ी बड़ी मशक़्क़तें उठाते और अपने आपको मुश्किलात और मसायब में डालते हैं। लेकिन यह तकालीफ़ उनको कोई नूर नहीं बख़्शतें और न कोई सकेंत और इतमीनान उनको मिलता है बल्कि अंदरूनी हालत उनकी ख़राब होती है। वह बदनी रियाज़त करते हैं जिसको अंदर से कम ताल्लुक़ होता है और कोई असर उनकी रूहानियत पर नहीं पड़ता।" करतब तो दिखा सकते हैं ज़ाहिरी तौर पर मशक़्क़तें भी कर लेते हैं। बड़े-बड़े फ़ाक़े भी कर लेते हैं, तकलीफ़ें भी बर्दाश्त कर लेते हैं लेकिन वह रूहानियत के नमूने नहीं दिखा सकते।" इसी लिए क़ुरआन शरीफ़ में لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ अल्लाह तआला ने ये फ़रमाया कि हज : 38) अर्थात अल्लाह तआला को तुम्हारी क़ुर्बानियों का गोश्त) और ख़ून नहीं पहुंचता बल्कि तक़्वा पहुंचता है। हक़ीक़त में ख़ुदा तआला पोस्त को पसंद नहीं करता बल्कि वह मग़ज़ चाहता है। अब सवाल यह होता है कि अगर गोश्त और ख़ून नहीं पहुंचता बल्कि तक़्वा पहुंचता है तो फिर क़ुर्बानी करने की क्या ज़रूरत है? और इस तरह नमाज़ रोज़ा अगर रूह का है तो फिर ज़ाहिर की क्या ज़रूरत है?'' दिल में बैठे-बैठे नमाज़ पढ़लें, दुआएं कर लें। रो लिए। अल्लाह तआला के आगे फ़र्याद कर ली जिस तरह पहले में था विभिन्न नमाज़ों की जो हालतें हैं क़ियाम है, रुकू है, सजदा है इस की क्या ज़रूरत है

फ़रमाया "इस का जवाब यही है कि यह बिल्कुल पक्की बात है कि जो लोग जिस्म से ख़िदमत लेना छोड़ देते हैं उनको रूह नहीं मानती और इस में वह नयाज़ मंदी और उबूदियत पैदा नहीं हो सकती जो असल उद्देश्य है। और जो सिर्फ जिस्म से काम लेते हैं रूह को इस में शरीक नहीं करते वह भी ख़तरनाक ग़लती में मुबतला हैं। और ये जोगी इसी किस्म के हैं।" जो अपने जिस्मों से तो काम लेते हैं रूह से उनका कोई ताल्लुक़ नहीं होता। "रूह और जिस्म का बाहम ख़ुदा तआला ने एक ताल्लुक़ रखा हुआ है और जिस्म का असर रूह पर पड़ता है। उदाहरणतः अगर एक शख़्स तक-ल्लुफ़ से रोना चाहे तो आख़िर उस को रोना आ ही जाएगा और ऐसा ही जो तकल्लु-फ़ से हँसना चाहे उसे हंसी आ ही जाती है। इसी तरह पर नमाज़ की जिस क़दर हालतें जिस्म पर वारिद होती हैं मसलन खड़ा होना या रुकू करना उस के साथ ही रूह पर भी असर पड़ता है और जिस क़दर जिस्म में नयाज़ मंदी की हालत दिखाता है उसी क़दर रूह में पैदा होती है।" जिस क़दर आजिज़ी होती है, नयाज़ मंदी होती है वह रूह में भी पैदा होती है" अगरचे ख़ुदा निरे सजदा को क़बूल नहीं करता।" अगर सिर्फ सजदा कर दिया और इस में कोई आजिज़ी नहीं, अजुज़ नहीं, नयाज़ मंदी नहीं, रूह उस का साथ नहीं दे रही तो अल्लाह तआला उस सज्दे को क़बूल नहीं करता'' मगर सजदा को रूह के साथ एक ताल्लुक़ है इसलिए नमाज़ में आख़िरी मुक़ाम सजदे का है। जब इन्सान नियाज़मंदी की इंतेहाई मुक़ाम पर पहुंचता है तो उस वक़्त वह सजदा ही करना चाहता है।" फ़िल्ली बात है वह इंतेहाई अजुज़ की हालत दिखाना चाहता है। झुक गए, सजदा में चले गए। फ़रमाते हैं "जानवरों तक में भी यह हालत मुशाहिदा की जाती है। कुत्ते भी जब अपने मालिक से मुहब्बत करते हैं तो आकर उस के पांव पर अपना सिर रख देते हैं और अपनी मुहब्बत के ताल्लुक़ का इज़हार सजदा की सूरत में करते हैं। इस से साफ़ पाया जाता है कि जिस्म को रूह के साथ ख़ास ताल्लुक़ है। ऐसा ही रूह की हालतों का असर जिस्म पर नमूदार हो जाता है। जब रूह ग़मनाक हो तो जिस्म पर भी इस के आसार ज़ाहिर होते हैं और आँसू और उदासी ज़ाहिर है।'' तबीयत बुझी बुझी सी रहने लगती है। अगर रूह में कोई ग़म है, इन्सान के दिल के अंदर कोई ग़म है तो जिस्म भी थका थका लगता है, बुझी बुझी तबीयत रहती है, दूसरों को भी ज़ाहिर हो जाता है कि इस की हालत क्या बन रही है। किसी मजलिस में बैठने को दिल नहीं करता। बैठे हों तो लोग पूछ रहे होते हैं किया हुआ। फ़रमाया कि "अगर रूह और जिस्म का बाहम ताल्लुक़ नहीं तो ऐसा क्यों होता है? दौरान-ए-ख़ून भी क़लब का एक काम है परंतु इस में भी शक नहीं कि क़लब आबपाशी जिस्म के लिए एक इंजन है।" ख़ून चलता है दल के ज़रीया से लेकिन एक इंजन के तौर पे दिल चल रहा है। "इस के बस्त और क़बज़ से सब कुछ होता है।" दिल का जो पंप करना है उसी से सब कुछ हो रहा होता है।

ग़रज़ जस्मानी और रुहानी सिलसिले दोनो बराबर चलते हैं।" कभी दिल फैलता" है फिर सिकुड़ता है, फैलता है सिकुड़ता है वही जो जिस्मानी निज़ाम को चलाता है ख़ून की गर्दिश इस से होती है। कहते हैं जस्मानी और रुहानी सिलसिले भी इसी तरह बराबर चलते हैं।" रूह में जब आजिज़ी पैदा हो जाती है फिर जिस्म में भी पैदा हो जाती है। इस लिए जब रूह में वाक़्य में आजिज़ी और नयाज़ मंदी हो तो जिस्म में इस के आसार ख़ुद बख़ुद ज़ाहिर हो जाते हैं और ऐसा ही जिस्म पर एक अलग असर पड़ता है तो रूह भी इस से प्रभावित हो ही जाती इस लिए ज़रूरी है कि जब ख़ुदा तआला के हुज़ूर नमाज़ में खड़े हो तो चाहिए कि अपने वजूद से आजिज़ी और इरादत मंदी का इज़हार करो अगरचे उस वक़्त यह एक किस्म का नफ़ाक़ होता है।" अर्थात यह तो नफ़ाक़ है नाँ कि दिल नहीं चाह रहा लेकिन फिर भी ज़बरदस्ती आजिज़ी का इज़हार करो लेकिन करना है" मगर रफ़्ता-रफ़्ता उस का असर दाइमी हो जाता है" आदत पड़ जाती है और फिर रूह और जिस्म दोनों एक साथ काम करना शुरू कर देते हैं और फ़रमाया "और वाक़ई रूह में वह नियाज़मंदी और फ़िरोतनी पैदा (.होने लगती है।" (मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 420-422 ऐडीशन 1984 ई

और जब यह हालत पैदा होनी शुरू होती है तो इन्सान को नमाज़ में फिर लज़्ज़त भी आने लगती है। केवल अपने मतलब के लिए वह ख़ुदा तआला के हुज़ूर नहीं जाता बल्कि फिर ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ और मुहब्बत में नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा करता है।

: फिर मज़ीद वज़ाहत फ़रमाते हुए फ़रमाते हैं

बाअज़ लोग कहते हैं कि हमको नमाज़ों में लज़्ज़त नहीं आती परंतु वह नहीं" जानते कि लज़्ज़त अपने इख़तेयार में नहीं है और लज़्ज़त का मयार भी अलग है ऐसा होता है कि एक शख़्स अशद दर्जा की तकलीफ़ में मुबतला होता है मगर वह इस तकलीफ़ को भी लज़्ज़त ही समझ लेता है।" इन दिनों में जब आप यह बयान फ़र्मा रहे थे ट्रान्सवाल में आज़ादी की लड़ाई हो रही थी। कहते हैं "देखो ट्रान्सवाल में जो लोग लड़ते हैं।" इस की मिसाल दे रहे हैं आप। "बावजूद यह कि इस में जानें जाती हैं और औरतें बेवा और बच्चे यतीम होते हैं परंतु क़ौमी हमीयत और पासदारी उनको एक लज़्ज़त और सरूर के साथ मौत के मुँह में ले जा रही है।'' क़ौम के लिए वे क़ुर्बानी कर रहे हैं

उनको क़ौमी हमीयत और पासदारी मौत के मुँह में ख़ुशी के साथ ले जाती है।" उधर क़ौम उनकी मेहनतों और जाँ-फ़िशानियों की क़दर कर रही है जबकि अग़राज़--ए-क़ौमी मुत्तहिद हैं।" अग़राज़ तो एक ही हैं। एक फ़रीक़ क़ुर्बानियां कर रहा है और दूसरे उनको encourage कर रहे हैं, उन की क़दर कर रहे हैं।" फिर उन की मेहनतों की क़दर क्यों होती है? उनके दुख और तकालीफ़ की वजह से।" क्योंकि वे दुख उठा रहे हैं इसलिए उनकी क़दर होती है।" उन की मेहनत और जाँ-फ़िशानी के बाइस" उनकी क़दर होती है जो आज़ादी हासिल करने के लिए तकलीफ़ें उठा रहे हैं। ग़रज़ सारी लज़्ज़त और राहत दुख के बाद आती है। इसी लिए क़ुरआन शरीफ़" अलम नश्रह : 7) अगर किसी राहत) اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا में यह क़ायदा बताया है। से पहले तकलीफ़ नहीं तो वह राहत राहत ही नहीं रहती। इसी तरह पर जो लोग कहते हैं कि हमको इबादत में लज़्ज़त नहीं आती उनको पहले अपनी जगह सोच लेना "ज़रूरी है कि वह इबादत के लिए किस क़दर दुख और तकालीफ़ उठाते हैं। लज़्ज़त नहीं आती तो पहले देखें, सोचें कि उन्होंने इबादत के लिए कोई तकलीफ़ उठाई? "जिस क़दर दुख और तकालीफ़ इन्सान उठाएगा वही तबदील सूरत के बाद लज़्ज़त हो जाता है।" फ़रमाया कि "मेरी मुराद इन दुखों से नहीं कि इन्सान अपने तकालीफ़ उठाने का दावा مالا یطاق आपको बेजा मशक़्क़तों में डाले और करे।''(मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 422 – 423 ऐडीशन 1984 ई.) बल्कि मुराद यह है कि वक़्त पर नमाज़ों की तरफ़ भी उनके जो पूरे लवाज़मात हैं उस के साथ तैयारी कर के अदा करने की कोशिश करे और नींद को भी क़ुर्बान करे और अपने कारोबारों को भी क़ुर्बान करे और वक़्त पर नमाज़ अदा करने की कोशिश करे। अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिल में पैदा करे।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो ख़ुद तो किसी किस्म की तकलीफ़ उठाते नहीं या उठाना नहीं चाहते और समझते हैं कि दूसरों से दुआ करवा कर उनके मसायल हल हो जाऐंगे। उनसे बाअज़ दफ़ा पूछो तो यह जवाब होता है कि पाँच नमाज़ें भी बाक़ाय-दगी से नहीं पढ़ते। एक दफ़ा एक बेटे ने अपने बाप के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दुआ की ग़रज़ से कहा और यह दुआ किसी ज़ाती ग़रज़ के लिए नहीं थी बल्कि उस के दीन के लिए थी। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तवज्जा से तुम दुआ करो। तुम ख़ुद तवज्जा से दुआ करो। बाप की दुआ जिस तरह बेटे के लिए क़बूल होती है और बेटे की बाप के वास्ते क़बूल हुआ करती है। फ़रमाया अगर आप भी तवज्जा से दुआ करें, आप इस शख़्स को फ़र्मा रहे

हैं कि अगर आप भी तवज्जा से दुआ करें तो उस वक़्त हमारी दुआ का भी असर होगा। (उद्धारित मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 187-188 ऐडीशन 1984 ई.) ख़ुद दुआ करोगे तो फिर मेरी दुआओं का असर होगा। नहीं तो कोई नहीं होगी। अतः दुआएं करवाने वाले सिर्फ दूसरों की दुआओं पर इन्हिसार न करें बल्कि ख़ुद भी तवज्जा से करें।

इबादत में लज़्ज़त के हासिल करने के तरीक़ के बारे में वर्णन फ़रमाते हुए मज़ीद फ़रमाते हैं कि "याद रखो कि जब इन्सान ख़ुदा तआला के लिए अपनी महबूब चीज़ों को जो ख़ुदा की नज़र में मकरूह और इस के मंशा के मुख़ालिफ़ होती हैं छोड़कर अपने आपको तकालीफ़ में डालता है तो ऐसी तकालीफ़ उठाने वाले जिस्म का असर रूह पर भी पड़ता है।" क्या तकालीफ़ उठानी हैं। पहले आया था नाँ कि तकलीफ़ उठानी चाहिए। किस किस्म की तकलीफ़ें? जो मकरूह चीज़ें हैं, जो अल्लाह की मंशा के मुख़ालिफ़ हैं उनको छोड़ो। उनके छोड़ने से तकलीफ़ भी पहुँचती हो तो छोड़ो।" तो ऐसी तकालीफ़ उठाने वाले जिस्म का असर रूह पर भी पड़ता है और वह भी इस से मुतास्सिर हो कर साथ ही साथ अपनी तबदीली में लगती है यहां तक कि कामिल नयाज़ मंदी के साथ आस्ताँने उलूहियत पर बे-इख़्तियार हो कर गिर पड़ती है।" इस तरह जब तकलीफ़ें उठाओगे, अल्लाह की ख़ातिर बाअज़ चीज़ों को छोड़ोगे तो रूह पर इस का असर होगा

जब रूह पर इस का असर होगा तो नमाज़ों में, सज्दे में, रुकू में वह रूह अल्लाह "तआला के हुज़ूर गिरेगी। ये तरीक़ है इबादत में लज़्ज़त हासिल करने का।

फ़रमाया "तुमने देखा होगा कि बहुत से लोग हैं जो अपनी इबादत में लज़्ज़त का यह तरीक़ समझते हैं कि कुछ गीत गा लिए या बाजे बजा लिए और यही उसकी इबादत होगी आँखें बंद कर के समाधि में चले गए तो समझते हैं यही इबादत हो गई या गीत सुन लिए वही इबादत हो गई। फ़रमाया "इस से धोखा मत खाओ। ये बातें नफ़्स की लज़्ज़त का बायस हों तो हों मगर रूह के लिए उनमें लज़्ज़त की कोई चीज़ नहीं। उनसे रूह में फ़िरोतनी और इनकेसारी के जोहर पैदा नहीं होते और इबादत का असल मंशा ग़म हो जाता है।" फ़रमाया कि "तवायफ़ की महफ़िलों में भी एक आदमी ऐसा मज़ा हासिल करता है तो क्या वह इबादत की लज़्ज़त समझी जाती है? यह बारीक बात है जिसको दूसरी कौमें समझ ही नहीं सकती हैं क्योंकि उन्होंने "इबादत की असल ग़रज़ को समझा ही नहीं।

(मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 423-424 ऐडीशन 1984 ई)

हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम की वफ़ा और अपने आपको तकालीफ़ में ख़ुदा तआला की ख़ातिर डालने और इस के नतीजा में अल्लाह तआला के सलूक की उदाहरण देते हुए आप फ़रमाते हैं : "ख़ुदा तआला का क़ुरब हासिल करने की राह यह है कि इस के लिए सिदक़ दिखाया जाए। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जो وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ क़ुरब हासिल किया तो इस की वजह यही थी। इसलिए फ़रमाया है وَفّٰٓى अल् नजम : 38) इब्राहीम अलैहिस्सलाम वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम है) जिसने वफ़ादारी दिखाई। ख़ुदा तआला के साथ वफ़ा-दारी और सिदक़ और इख़लास दिखाना एक मौत चाहता है। जब तक इन्सान दुनिया और इस की सारी लज़्ज़तों और शौकतों पर पानी फेर देने को तैयार न हो जाए और हर ज़िल्लत और सख़्ती और तंगी ख़ुदा के लिए गवारा करने को तैयार न हो यह सिफ़त पैदा नहीं हो सकती। बुतपरस्ती यही नहीं कि इन्सान किसी दरख़्त या पत्थर की प्रसतिश करे बल्कि हर एक चीज़ जो अल्लाह तआला के क़ुरब से रोकती और इस पर मुक़द्दम होती है वह बुत है और इस क़दर बुत इन्सान अपने अंदर रखता है कि उस को पता भी नहीं लगता कि मैं बुतपरस्ती कर रहा हूँ। अतः जब तक ख़ालिस ख़ुदा तआला ही के लिए नहीं हो जाता और इस की राह में हर मुसीबत की बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं होता सिदक़ और इख़लास का रंग पैदा होना मुश्किल है। इबराहीम अलैहिस्सलाम को जो यह ख़िताब की आवाज़ उस वक़्त आई اِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى मिला यह यूंही मिल गया था? नहीं। जबकि वह बेटे की क़ुर्बानी के लिए तैयार हो गया। अल्लाह तआला अमल को चाहता और अमल ही से राज़ी होता है और अमल दुख से आता है लेकिन जब इन्सान ख़ुदा के लिए दुख उठाने को तैयार हो जाए तो ख़ुदा तआला उस को दुख में भी नहीं देखो! इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब अल्लाह तआला के हुक्म की तामील के लिए अपने बेटे को क़ुर्बान कर देना चाहा और पूरी तैयारी कर ली तो अल्लाह तआला ने उस के बेटे को बचा लिया। वह आग में डाले गए लेकिन आग उन पर कोई असर नहीं कर सकी।

अल्लाह तआला की राह में तकलीफ़ उठाने को तैयार हो जावे तो ख़ुदा तआला तकालीफ़ से बचा लेता है

हमारे हाथ में जिस्म तो है रूह नहीं है। फ़रमाया "हमारे हाथ में जिस्म तो है रूह नहीं। लेकिन इस में कोई शक नहीं कि रूह का ताल्लुक़ जिस्म से है और जस्मानी उमूर का असर रूह पर ज़रूर होता है। इस लिए यह कभी ख़्याल नहीं करना चाहिए कि जिस्म से रूह पर कोई असर नहीं पड़ता। जिस क़दर आमाल इन्सान से होते हैं वह इसी मुरक्कब सूरत से होते हैं।" अर्थात जिस्म और रूह दोनों को मिलाने से। "अलग जिस्म या अकेली रूह कोई नेक या बदअमल नहीं करती। यही वजह है कि जज़ा सज़ा में भी दोनो के मुताल्लिक़ात का लिहाज़ रखा गया है। बाअज़ लोग इसी राज़ को न समझने की वजह से एतराज़ कर देते हैं कि मुस्लमानों का बहिश्त जस्मानी है हालाँकि वह इतना नहीं जानते जब आमाल के सदूर में जिस्म साथ था तो जज़ा के वक़्त अलग क्यों किया जाए? उद्देश्य यह है कि इस्लाम ने इन दोनो तरीक़ों को जो इफ़रात और तफ़रीत के हैं छोड़कर एतेदाल की राह बताई है। ये दोनो ख़तरनाक बातें हैं उनसे परहेज़ करना चाहिए। मुजर्रिद ताज़ीब-ए-जिस्म से कुछ नहीं बनता और ''महिज़ आराम तलबी से भी कोई नतीजा पैदा नहीं होता।

मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 429-430 ऐडीशन 1984 ई.) मुश्किलात में डालने से)

जिस्म को भी कुछ नहीं बनता और सिर्फ आराम तलबी अगर करोगे तो फिर भी कोई फ़ायदा नहीं होगा। रूह और जिस्म को मिलाना ज़रूरी है।

दुआ के ज़माने में भी इब्तला आते हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत-ए-मूसा की क़ौम की मिसाल देते हुए कि किस तरह उन पर इबतेला आए और लंबे हुए। हैं फ़रमाते हैं कि

प्रत्येक काम के लिए ज़माना होता है और सईद उस का इंतेज़ार करते हैं। जो" इंतेज़ार नहीं करता और पलभर मे चाहता है कि इस का नतीजा निकल आवे वह जल्दबाज़ होता है और बा-मुराद नहीं हो सकता। मेरे नज़दीक यह भी मुम्किन है और होता है कि दुआ के ज़माना में इबतेला के तौर पर और भी इबतेला आ जाते हैं। जैसे हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम जब बनीइसराईल को फ़िरऔन की ग़ुलामी से निजात दिलाने के लिए आए तो उनको पहले मिस्र में फ़िरऔन ने यह काम दिया हुआ था कि वह आधा दिन ईंटें पाथा करें और आधा दिन अपना काम किया करें।" आधे दिन की उनको छुट्टी होती थी। आधा दिन फ़िरऔन का काम करना था। "लेकिन जब हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम ने उनको निजात दिलाने की कोशिश की तो फिर शरीरों की शरारत से बनी इसराईल का काम बढ़ा दिया गया।" सज़ा के तौर पर क्या हुआ "और उन्हें हुक्म मिला कि आधा दिन तो तुम ईंटें पाथा करो और आधा दिन घास लाया करो।" वह फ़िरऔन के काम ही होंगे। अपने लिए उनके पास कोई वक़्त नहीं था। "हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम को जब यह हुक्म मिला और उन्होंने बनीइसराईल को सुनाया तो वह बड़े नाराज़ हुए" क़ौम उनकी" और कहा कि मूसा ख़ुदा तुमको वह दुख दे जो हमको मिला है। और भी उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम को बद दुआएं दें मगर मूसा अलैहिस्सलाम ने उनको यही कहा कि तुम सब्र करो। तौरात में यह सारा क़िस्सा लिखा है कि जूँ-जूँ मूसा अलैहिस्सलाम उन्हें तसल्ली देते थे वह और भी आक्रोशित होते थे।" और भी ग़ुस्सा में आते थे। "आख़िर यह हुआ "कि मिस्र से भाग निकलने की तजवीज़ की गई

वहां से हिज्रत करने की तजवीज़ हुई "और मिस्र वालों के कपड़े और बर्तन वग़ैरा जो लिए थे वे साथ ही ले आए।" जो कुछ उन्हें मिला था वह भी साथ ले लिया। "जब हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम क़ौम को लेकर निकल आए तो फ़िरऔन ने अपने लश्कर को लेकर उनका पीछा किया। बनी इसराईल ने जब देखा कि फ़रावनियों का लश्कर उनके क़रीब है तो वह बड़े ही मुज़्तरिब हुए। इसलिए क़ुरआन शरीफ़ अल् शोरा : 62)) اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ में लिखा है कि उस वक़्त वह चिल्लाए और कहा। हे मूसा हम तो पकड़े गए। परंतु मूसा अलैहिस्सलाम ने जो नबुव्वत की आँख से अल् शोरा) كَلَّآ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ अंजाम को देखते थे। उन्हें यही जवाब दिया। :63) हरगिज़ नहीं। मेरा रब मेरे साथ है।

तौरात में लिखा है कि उन्होंने यह भी कहा कि क्या मिस्र में हमारे लिए क़ब्रें नहीं थीं और यह इज़तेराब इस वजह से पैदा हुआ कि पीछे फ़िरऔन का लश्कर और आगे दरिया-ए-नील था। "वह कह रहे थे अगर मिस्र में हम रहते तो वहां भी तो मरना था। वहां भी दफ़न हो जाते। यह तो अब बड़ी मुश्किल में आ गए कि आगे दरिया है और पीछे फ़ौज है जो हमें, सारों को क़तल-ओ-ग़ारत करेगी। बड़े परेशान

थे। फ़रमाया कि "वे देखते थे कि न पीछे जा कर बच सकते हैं और न आगे जा कर। मगर अल्लाह तआला क़ादिर मुक़तदिर ख़ुदा है। दरिया नील में से उन्हें रास्ता मिल गया और सारे बनी इसराईल आराम के साथ पार हो गए परंतु फ़रावनियों का लश्कर ग़र्क़ हो गया .. यह अज़ीमुश्शान मोजिज़ा था जो ऐसे वक़्त पर अल्लाह तआला ने उनके लिए राह पैदा कर दी और यही मुत्तक़ी के साथ होता है कि हर ज़ैक़ से" हर अल् तलाक : 3)) يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا तंगी से "उसे नजात और की राह मिलती है। उद्देश्य ऐसा होता है कि दुआ और इस की क़बूलीयत के ज़माना के दरमयानी औक़ात में बसा-औक़ात इबतेला पर इबतेला आते हैं और ऐसे ऐसे इबतेला भी आ जाते हैं जो कमर तोड़ देते हैं परंतु मुस्तक़िल मिज़ाज सईदुल फ़ितरत इन इबतेलाओं और मुश्किलात में भी अपने रब की इनायतों की ख़ुशबू सूँघता है और फ़िरासत की नज़र से देखता है कि इस के बाद नुसरत आती है।

इन इबतेलाओं के आने में एक रहस्य यह भी होता है कि दुआ के लिए जोश बढ़ता है क्योंकि जिस जिस क़दर इज़तेरार और इज़तेराब बढ़ता जावेगा उसी क़दर रूह में याचिका होती जाएगी। और यह दुआ की क़बूलीयत के अस्बाब में से हैं। "गुदाज़िश पैदा होना, रिक़्क़त पैदा होना और दुआओं की तरफ़ तवज्जा पैदा होना यह इस बात की दलील है कि अल्लाह तआला दुआएं क़बूल करना चाहता है।" "अतः कभी घबराना नहीं चाहिए और बेसबरी और बेक़रारी से अपने अल्लाह पर बदज़न नहीं होना चाहिए। यह कभी भी ख़्याल करना नहीं चाहिए कि मेरी दुआ क़बूल नहीं होगी या नहीं होती।" फ़रमाया कि "ऐसा वहम अल्लाह तआला की इस सिफ़त से इंकार "हो जाता है कि वह दुआएं क़बूल फ़रमाने वाला है।

(.मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 433 से 435 ऐडीशन 1984 ई)

अगर अल्लाह तआला के ख़िलाफ़ ऐसी सूरत पैदा हो जाए तो फिर दहरियत की तरफ़ क़दम उठते हैं और आजकल तमाम-तर तवज्जा मज़हब और ख़ुदा तआला के मुख़ालेफ़ीन की जैसा कि मैंने कहा इस तरफ़ है कि यह दिलों में डाला जाए कि ख़ुदा तआला ने तुम्हें क्या दिया। मज़हब का क्या फ़ायदा है। मज़हब सुस्त बनाता है। मज़हब ख़्याली बातें ज़हनों में पैदा करता है। और वक़्त में

हर अहमदी का यह काम है कि अल्लाह तआला से पुख़्ता ताल्लुक़ पैदा करे। वक़्ती और ज़रूरत के वक़्त ताल्लुक़ न हो और इबादत न हो सिर्फ़ बल्कि सुकून के हालात में, आसाइश के हालात में भी अल्लाह तआला से ताल्लुक़ हो और अपनी इबादतों की हिफ़ाज़त हो और दुआओं पर यक़ीन हो।

अतः यही एक अहमदी की ज़िम्मेदारी है और यही बैअत का हक़ अदा करना है। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "हमारी जमाअत के लिए इसी बात की ज़रूरत है कि उनका ईमान बढ़े। ख़ुदा तआला पर सच्चा यक़ीन और मार्फ़त पैदा हो। नेक-आमाल में सुस्ती और कसल न हो क्योंकि अगर सुस्ती हो तो फिर वुज़ू करना भी एक मुसीबत मालूम होता है यदि वह तहज्जुद पढ़े।" तहज्जुद के लिए उठना तो बड़ी बात है आम नमाज़ों के लिए वुज़ू करना भी मुश्किल लगता है। फ़रमाया "अगर आमाल-ए-सालहा की क़ुव्वत पैदा न हो और नेकियों मे आगे बढ़ने के लिए जोश न हो" नेकियों में बढ़ने के लिए अगर तुम्हारे अन्दर जोश नहीं है ""तो फिर हमारे साथ ताल्लुक़ पैदा करना बेफ़ाइदा है।

(.मल् फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 439 ऐडीशन 1984 ई)

अतः बड़े फ़िक्र के साथ हमें अपना ताल्लुक़ अल्लाह तआला से बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए और जब यह हक़ीक़ी ताल्लुक़ होगा तो दुआओं की क़बूलीयत के नज़्ज़ारे भी हम देखेंगे। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए।

इन दिनों में विशेषता पाकिस्तान के अहमदियों के लिए बहुत दुआ करें। वहां अहमदियों के लिए ज़्यादा से ज़्यादा मुश्किलात पैदा करने की कोशिश की जा रही है। इसी तरह अल् जीरिया के अहमदियों के लिए भी दुआ करें।

वहां भी दुबारा आजकल उनको उबाल आया हुआ है। मुश्किलात पैदा कर हैं। इसी तरह दूसरी जगहों पर भी जहां-जहां अहमदियों को मुश्किलात हैं।

अल्लाह तआला हर जगह हर अहमदी को महफ़ूज़ रखे और हर परेशानी से बचाए और दुश्मन को नाकाम करे।

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

अलैहिस्सलाम ने इस बात को यक़ीनी बनाया कि हज़ारों बल्कि लाखों मासूम लोगों इस तकलीफ़ से बच जाएं जिस में वे मिस्टर डोई की ईसाईयों और मुस्लमानों के मध्य मज़हबी जंगों की ख़ाहिश पूरी होने के नतीजा में पड़ सकते थे। इसलिए आप अलैहिस्सलाम ने मिस्टर डोई को मुबाहला का चैलेंज दिया। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मुस्लमानों की हलाकत और तबाही की दुआ करने की बजाय मिस्टर डोई यह दुआ करें कि हम दोनों में से जो झूठा है वह दूसरे की ज़िंदगी में मर जाए। यह दरअसल एक हमदर्दाना फ़ेअल और हालात को बेहतर करने का माध्यम था। बजाय ईस के कि समस्त मुस्लमानों और ईसाईयों को एक दूसरे के मुक़ाबिल पर खड़ा कर दिया जाए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात पर-ज़ोर दिया कि आप और मिस्टर डोई दुआ का सहारा लें और मामला अल्लाह तआला के हाथ में दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह सच्चाई जानने का एक मुनासिब और पुरअमन माध्यम था। अगर यह कहा जाए कि यह अदावत और इश्तिआल अंगेज़ी के मुक़ाबला पर सब्र का कामिल उदाहरण था तो इस में कोई मुबालग़ा नहीं होगा। इस चैलेंज के बाद मिस्टर डोई ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ इंतेहाई नाज़ेबा तरीक़ इख़तेयार किया। इसलिए रिपोर्ट हुआ है कि मिस्टर डोई ने कहा कि "हिन्दुस्तान में एक मुहम्मदी मसीह है जो मुझे बार-बार लिखता है .. तुम ख़्याल करते हो कि मैं इन मच्छरों और मक्खीयों का जवाब दूँगा अगर में उन पर अपना पांव रखूँ तो मैं उनको कुचल कर मार डालूँगा।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फिर अपना चैलेंज दोहराया और अमरीका और अन्य इलाक़ों में इस की ख़ूब तशहीर हुई। सहाफ़ी हज़रात मिस्टर डोई की ताक़त और आला मुक़ाम को वर्णन करते और इस का मुवाज़ना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इस तरह करते हैं कि इंडिया के एक दौर उफ़्तादा गांव से ताल्लुक़ रखने वाला शख़्स जिसकी दौलत और दुनियावी रसूख़ का मिस्टर डोई से कोई मुक़ाबला ही नहीं। फिर जस्मानी तौर पर भी मिस्टर डोई हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उम्र में छोटा और सेहत में बेहतर था। इस समस्त ज़ाहिरी फ़र्क़ के बावजूद हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कभी भी अपना चैलेंज वापस लेने का नहीं सोचा और इस हवाला से ज़रा भी हिचकिचाहट का इज़हार नहीं किया और समस्त दुनिया वह बेसरो सामानी के बावजूद जल्द ही नतायज आप अलैहिस्सलाम के हक़ में पलट गए। पै दर पै ऐसे वाक़ियात हुए कि डोई की हिमायत जाती रही और उस की दौलत, जस्मानी और ज़हनी सलाहीयतें ख़त्म हो गईं। अंततः वह अपने अंजाम को पहुंचा। जिसको यू ऐस मीडीया ने अफ़सोसनाक अंजाम क़रार दिया। निसंदेह उस वक़्त का यू ऐस मीडीया ख़राज-ए-तहिसीन के लायक़ है जिसने ईमानदारी से इस की रिपोर्टिंग की। उदाहरणतः एक मशहूर Boston Herald अख़बार ने यह शीर्षक दिया कि "Great is Mirza Ghulam Ahmad – the Messiah"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मुख़्तसर यह कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कभी भी अपने ख़्यालात और इक़तेदार को किसी पर नाफ़िज़ करने की कोशिश नहीं की, न ही मिस्टर डोई या किसी भी मुख़ालिफ़ इस्लाम की नफ़रत को ताक़त के साथ या ज़बरदस्ती रोकने का सोचा। अहमदी मुस्लमानों के लिए बानी जमाअत की सदाक़त का एक निशान है, इस तनाज़ुर में ज़ायन का शहर हमारी तारीख़ में एक ख़ास एहमीयत रखता है। वक़्त की कमी के बायस मैं मज़ीद तफ़सील में नहीं जा सकता। जबकि मस्जिद में इस मुबाहला के हवाला से ख़ुसूसी नुमाइश का एहतेमाम किया गया है, अगर आप इस हवाले से मज़ीद जानना चाहते हैं तो आप जाने से क़बल इस नुमाइश से इस्तिफ़ादा कर सकते हैं। या मुम्किन है कि आप पहले ही नुमाइश देख चुके हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अतः में यह कहना चाहता हूँ कि आज हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम मसीह मौऊद-ओ-महदी माहूद के पैरोकार अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि हम मस्जिद फ़तह अज़ीम का हक़ीक़ी मज़हबी आज़ादी के निशान के तौर पर उद्घाटन कर रहे हैं। इस के दरवाज़े इस सुनहरे पैग़ाम के साथ खोले जा रहे हैं कि समस्त लोगों और कम्यूनिटीज़ के मज़हबी हुक़ूक़ और पुरअमन अक़ायद का हमेशा ख़्याल रखा जाएगा और उनका तहफ़्फ़ुज़ किया जाएगा। यह जमाअत

अहमदिया मुस्लिमा का अव्वलीन उद्देश्य है कि बनीनौ इन्सान को रुहानी निजात की राह पर चलाया जाए और इस बात को यक़ीनी बनाया जाए कि समस्त लोगों रंग-ओ-नसल की तफ़रीक़ से क़त-ए-नज़र बाहमी प्यार और हम-आहंगी और हक़ीक़ी अमन और तहफ़्फ़ुज़ रहें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मेरी दिली-ख़्वाहिश है और मैं दुआ करता हूँ कि यह मस्जिद इन शा अल्लाह अमन, तहम्मुल और समस्त बनीनौ इन्सान से मुहब्बत का स्रोत होगी। मेरी दुआ है कि यहां इबादत करने वाले समस्त आजिज़ी के साथ अपने ख़ालिक़ को पहचानें, उसी के आगे झुकें और बनीनौ इन्सान के हुक़ूक़ अदा करें। हमारा यक़ीन है कि हम इसी सूरत मे कामयाब-ओ-कामरान हो सकते हैं कि जब हम अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने और बनीनौ इन्सान के हुक़ूक़ अदा करने वाले होंगे। इन शब्दों के साथ मैं आप सब का एक मर्तबा फिर शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप आज शाम इस प्रोग्राम में शामिल हुए हैं। अल्लाह तआला आप सब पर अपना फ़ज़ल फ़रमाए। आमीन

आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने मेयर का शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने शहर की चाबी पेश की। तथा फ़रमाया मुझे यक़ीन है कि अब यह चाबी महफ़ूज़ हाथों में है।

हुज़ूर अनवर का यह ख़िताब 7 बजकर 23 मिनट तक जारी रहा आख़िर पर हुज़ूर ने दुआ करवाई। हुज़ूर अनवर के ख़िताब के इख़तेताम पर मेहमानों ने देर तक तालियाँ बजाईं। इसके बाद डिनर का प्रोग्राम हुआ। खाने के बाद भी कुछ मेहमानों के साथ हुज़ूर अनवर ने गुफ़्तगु फ़रमाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर महिलाओं की मारकी मे तशरीफ़ ले गए जहां महिलाएं मौजूद थीं 8 बजकर 30 मिनट पर हुज़ूर ने नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। इसके बाद हुज़ूर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

यक्म अक्तूबर 2022 ई. (शनिवार का दिन) शेष भाग

मेहमानों के तास्सुरात

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आज के ख़िताब ने मेहमानों पर गहिरा असर छोड़ा और बहुत से मेहमानों ने अपने तास्सुरात का इज़हार किया :

★ Illinois के कांग्रेस मैन राजा कृष्णा मूर्ती साहिब ने अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहा "क्या ही ख़ूबसूरत दिन है और क्या ही ख़ूबसूरत प्रोग्राम है। हुज़ूर ने अपनी आमद से हमें शरफ़ बख़्शा। मस्जिद फ़तह अज़ीम लोगों के जमा होने के लिए, इबादत करने के लिए बाहमी ताल्लुक़ात बढ़ाने के लिए और इस्लाम के बारे में आगाही हासिल करने के लिए बहुत ही उम्दा होगी।

★ एक और मेहमान Cheri Neal साहिब जो कि ज़ायन टाउन शिप की सुपरवाइज़र हैं वर्णन करती हैं कि मैं समस्त इंतेज़ामत से बहुत हैरान हूँ। मुझे बहुत ख़ुशी है कि आप अपने इस उद्देश्य में कामयाब हुए हैं जिस के लिए एक अरसा मेहनत की है। मैं यहां आकर बहुत ख़ुश हूँ।

★ John D Eidelberg लेक काओनटी के शेरिफ वर्णन करते हैं कि यहां आकर हुज़ूर को देखना, उनसे मिलना, उनसे बात करना और विभिन्न रहनुमाओं को सुनना मेरे लिए ख़ुशी का बायस है। यहां आना मेरे लिए बाइस-ए-फ़ख़र है। मैं आपका मशकूर हूँ कि आपने मुझे अपनी जमाअत के साथ ख़ूबसूरत लमहात गुज़ारने का अवसर दिया। हुज़ूर ने बाहमी ताल्लुक़ात और आपस में काम करने के बारे में बात की मैं इस से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपकी तक़रीर सुनना मेरे लिए काबिल फ़ख़र था। आपकी तक़रीर ख़्यालात को रोशन करने वाली थी।

★ एक और मेहमान Craig Constantine साहिब जो कि राईस यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं वर्णन करते हैं कि आपका पैग़ाम "मुहब्बत सब के लिए और नफ़रत किसी से नहीं" बाहमी एहतेराम, तहम्मुल, इज़्ज़त नफ़स का ख़्याल रखना, ये सब बुनियादी चीज़ें हैं और हमारे दिल से आती हैं और इस से दिल-ओ-दिमाग़ की रुहानी बेदारी होती है।

★ ज़ायन के साबिक़ा कमिशनर Amos Monk साहिब वर्णन करते हैं कि मेरे ख़्याल में आपकी तालीमात हर चीज़ का अहाता किए हुए हैं और दुनिया को इस से ज़्यादा आगाही होनी चाहिए। मेरे ख़्याल में यह आजकल की दुनिया का ख़ूबसूरत तरीन राज़ है। मैं अपने सामने मेज़ पर पड़े हुए ब्रोशर देख सकता हूँ जिस पर अदल-ओ-इन्साफ़, ख़ुलूस और मुहब्बत का पैग़ाम है। यही तो वह चीज़ें हैं जिसकी दुनिया को ज़रूरत है। नफ़रत ख़त्म कर दें तो दुनिया जन्नत नज़ीर हो जाएगी। मेरे ख़्याल में यह पैग़ाम समस्त दुनिया को सुनना चाहिए। दुनिया के मसायल का यही है।

★ ज़ाईन शहर के मेयर Billy Mckinney साहिब जिन्हों ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में ज़ायन शहर की चाबी पेश की अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं कि मैं यहां 1962 ई. से मुक़ीम हूँ। जैसा कि आप सब जानते हैं कि यह प्रोग्राम ज़ायन शहर और जमाअत अहमदिया के लिए एक तारीख़ी प्रोग्राम है। हुज़ूर से मिलकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। पहली मर्तबा ऐसा हुआ है कि किसी से मिलकर मुझे चुप लग गई हो। मुझे समझ नहीं आरही थी कि क्या कहूं। आपकी मौजूदगी का एहसास बहुत उम्दा है। जमाअत अहमदिया ने इस कम्यूनिटी में बहुत ख़िदमात सरअंजाम दी हैं। आइन्दा भी हम उम्मीद करते हैं। बाहमी ताल्लुक़ात को बढ़ाते हुए मिलकर काम करते रहेंगे। शहर के ठीक बीच में मस्जिद का होना भी एक उम्दा एहसास है।

★ Rabi Melinda Solma साहिब जो कि न्यूयार्क के Tanenbaum Center of Inter-Religious Understanding से ताल्लुक़ रखते हैं वर्णन करते हैं कि जमाअत अहमदिया से हमेशा की तरह बहुत मुतास्सिर हुआ हूँ। आपके ख़लीफ़ा का पैग़ाम बहुत उम्दा और सबको साथ लेकर चलने वाला है। इन तालीमात का अमली नमूना दिखाना, सब के लिए दरवाज़े खुले रखना, अमन के क़ियाम के लिए काम करना, प्रत्येक का बतौर इन्सान सम्मान करना यह बहुत ही आला तालीम है।

★ लोकल आरकेटेकट Kelvin Cox साहिब जिन्हों ने मस्जिद का नक़्शा, डिज़ाइन और तामीर में काम किया है कहते हैं यह बहुत ही उम्दा इमारत है और यहां पर हुज़ूर की मौजूदगी, यह एहसास में शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। हुज़ूर ने जो ख़ुदा तआला का पैग़ाम दिया कि दुनिया और सयासी उमूर से कोई ताल्लुक़ नहीं, सिर्फ अमन और प्यार का पैग़ाम पहुंचाना है, यह बहुत उम्दा पैग़ाम था और यही है जिसकी दुनिया को आज ज़रूरत है।

★ इस प्रोग्राम में एक मेहमान ऐसे भी शामिल थे जिन्हों ने ज़ायन मस्जिद की संग-ए-बुनियाद के अवसर पर एक ईंट रखने की सआदत पाई थी उन्होंने अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहा कि आज एक ख़ूबसूरत दिन था। मैं सुबह बेदार हुआ जैसे कि आज का दिन बहुत ख़ास है। मुझे पिछले साल इस मस्जिद की संग-ए-बुनियाद रखने की तौफ़ीक़ मिली। मैं बहुत ख़ुश था कि कब उसे मुकम्मल होता देखूँगा और हुज़ूर से मिल सकूँगा। हम बहुत ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हुज़ूर यहां तशरीफ़ लाए। आपकी मस्जिद हमारी कम्यूनिटी के लिए उम्मीद और दोस्ती का मार्ग है।

शेष आगे ..

★ ★ ★

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT

AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 26 January 2023 Issue No. 4

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई. (भाग-6)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दुनिया में अमन क़ायम करने के ज़िमन में क़ुरआन-ए-करीम की सूरत अल् हज आयत 40 और 41 मे आलमी मज़हबी आज़ादी क़ायम करने का अज़ीमुश्शान और बुनियादी उसूल वर्णन किया गया है। इन आयात करीमा में अल्लाह फ़रमाता है कि "क़िताल की इजाज़त सिर्फ उन लोगों को दी जाती है जिन के ख़िलाफ़ जंग की गई है क्योंकि उन पर ज़ुलम किए गए और निसंदेह अल्लाह उनकी मदद पर पूरी क़ुदरत रखता है। वे लोग जिन्हें उनके घरों से व्यर्थ मे निकाला गया केवल इस आधार पर कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब है।"

फिर फ़रमाता है "और अगर अल्लाह की तरफ़ से लोगों का दिफ़ा उनमें से बाअज़ को बाअज़ दूसरों से भिड़ा कर न किया जाता तो राहिब ख़ाने मुनहदिम कर दिए जाते और गिरजे भी और यहूद के मुआबिद भी और मसाजिद भी जिनमें बकसरत अल्लाह का नाम लिया जाता है और निसंदेह अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो उसकी मदद करता है। निसंदेह अल्लाह बहुत ताक़तवर (और) कामिल ग़लबा वाला है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इन दोनों आयात करीमा में जहां अल्लाह तआला ने पैग़ंबर इस्लाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दिफ़ाई जंग की इजाज़त दी है वहां यह भी वाज़ेह तौर पर निश्चित कर दिया कि यह इजाज़त इसलिए दी गई है कि ज़ुलम करने वाले ने दुनिया से मज़हबी आज़ादी ख़त्म करने की कोशिश की है। जंग की इजाज़त सिर्फ मुस्लमानों और उनकी मसाजिद की हिफ़ाज़त के लिए या दीन को फैलाने के लिए नहीं दी गई बल्कि क़ुरआन-ए-करीम निश्चित तौर पर फ़रमाता है कि अगर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग करने वालों को ताक़त से रोका नहीं जाता तो कोई गिरजा, राहिब ख़ाना, मंदिर, मस्जिद और कोई माबद महफ़ूज़ नहीं रहता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इसलिए क़ुरआन-ए-करीम ही वह वाहिद अल्लाह का कलाम है जो न केवल समस्त मज़ाहिब-ओ-अक़ायद के पैरोकारों को मुकम्मल मज़हबी आज़ादी फ़राहम करता है बल्कि एक क़दम आगे बढ़कर समस्त मुस्लमानों को और समस्त ऐसे लोगों जो कि मस्जिद आते हैं उनको ग़ैर मुस्लिमों के मज़हबी हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त का हुक्म देता है। ये वह अल्लाह का कलाम है जो कि समस्त मज़ाहिब, अदयान और अक़ायद की हिफ़ाज़त और दिफ़ा करता है। यह वह ख़ालिस और प्रत्येक के हुक़ूक़ समोने वाली इस्लामी तालीमात हैं जो हम समस्त दुनिया तक फैलाने की कोशिश कर हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जहां तक इस मस्जिद का ताल्लुक़ है तो आप सोचते होंगे कि हमने ज़ायन में मस्जिद निर्माण करने का फ़ैसला क्यों किया? निसंदेह इसका बुनियादी उद्देश्य तो वही है जो मैं वर्णन कर चुका हूँ। दूसरा यह कि जो लोग इस शहर की तारीख़ से वाक़फ़ीयत रखते हैं उनको इलम होगा कि ज़ायन शहर की बुनियाद एक Evangelist ईसाई मिस्टर इलैगज़ेंडर डोई ने रखी, जिसने ख़ुदा की तरफ़ से मामूर होने का दावे किया था। मिस्टर डोई इस्लाम की सख़्त मुख़ालिफ़त और मुस्लमानों से नफ़रत का इज़हार करता था। यह मुख़ालिफ़त जमाअत अहमदिया के इलम में आई और आप अलैहिस्सलाम ने उसको सीधे चैलेंज दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आप में से कुछ ये सवाल उठाएँगे कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने मस्टर्ड डोई को संबोधित करते हुए सख़्त लहजा क्यों अपनाया और यह किस तरह आपकी प्यार-ओ-मुहब्बत की तालीम से समानता है?

दरअसल हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुरअमन तालीमात और डोई को जवाब देने में बाहमी कोई विरोधाभास नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किसी एक अवसर पर भी फ़साद और कट्टरवाद की शिक्षा की हिदायत नहीं की। वास्तव मे जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मस्टर्ड डोई की इस्लाम और बानी इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ ईश - निंदा का इलम हुआ तो आप अलैहिस्सलाम ने बाहमी एहतेराम को मलहूज़ रखते हुए उसे दलील से क़ायल करने की कोशिश की कि वे तहम्मुल का मुज़ाहरा करे और मुस्लमानों के जज़बात का ख़्याल करे। इस के बरख़िलाफ़ मस्टर्ड डोई इस्लाम के मुक़ाबिल खड़ा हो गया और खुल कर इस्लाम के नाबूद करने की ख़ाहिश की। उदाहरणतः लिखता है कि "मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह दिन जल्द आए इस्लाम दुनिया से नाबूद हो जाए। हे ख़ुदा! तू ऐसा ही कर। हे ख़ुदा! इस्लाम को हलाक कर दे।"

फिर अपनी तहरीरात मैं मिस्टर डोई ने बड़े घमंड में इस को ईसाईयत और इस्लाम के मध्य अज़ीम जंग क़रार दिया। उसने लिखा कि अगर मुस्लमान ईसाईयत क़बूल न करें तो वह हलाकत-ओ-तबाही में मुबतला होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : उन इंतिहाई बयानात और ईश - निंदा के जवाब में जमाअत अहमदिया के संस्थापक

शेष पृष्ठ 10 पर

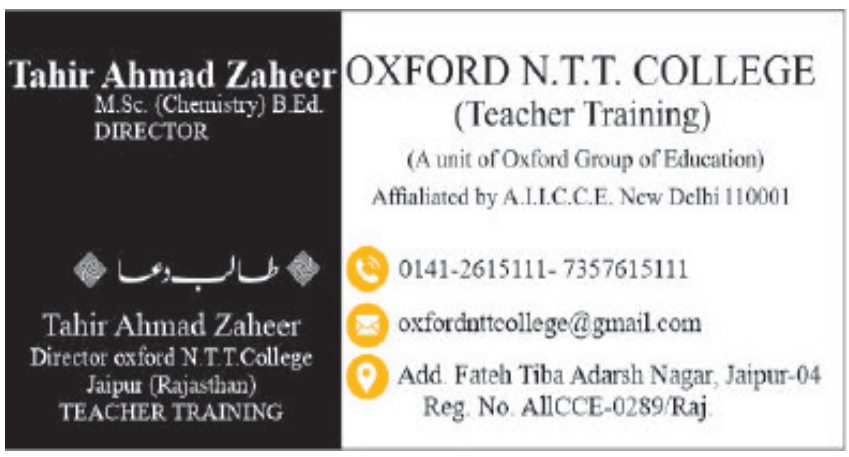

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad